

॥ श्रम एव जयते ॥

दे.भ.बा.भा.खंजिरे शिक्षण संस्था संचलित
नाईट कॉलेज ऑफ आर्ट् अँड कॉमर्स, इचलकरंजी
तहसील हातकणंगले, जिला कोल्हापूर

एक दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

इक्कीसवीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित विविध
विमर्श (सन् 2010 से अब तक)

07 Dec. 2019



संपादक

डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर

Sr. No.	Name of the Author	Title of the Paper	Page No.
बाल विमर्श			
1	श्री. अजित विठ्ठल लिपारे	प्रतिनिधि बाल कविताएँ में बाल विमर्श	122
2	डॉ. भगवान जाधव डॉ. वर्षारानी निवृत्तीराव सहदेव	डॉ. परशुराम शुक्ल के बालकाव्य का बच्चों के व्यक्तित्व विकास में योगदान	125
3	डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील	प्रवासी हिंदी साहित्य में बाल विमर्श	127
4	डॉ. एम. आर. मुंडकर	डॉ. परशुराम शुक्ल सूचनात्मक बाल साहित्य - स्वरूप और उपयोगिता	129
5	डॉ. पंडित बन्ने	हिंदी उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में बाल विचलन	133
6	डॉ. साईनाथ विठ्ठल चपले	डॉ. परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य का मूल्यांकन	136
7	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	इक्कीसवीं सदी की कविता में बाल विमर्श	140
8	प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंडी	डॉ. जाकिर अली 'रजनीश' की बाल कहानियों में आधुनिकता बोध	142
मजदूर विमर्श			
9	डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	'फॉस' में आत्महत्याग्रस्त किसान की बेटी कलावती	146
10	इन्द्रदेव शर्मा	किसान से मजदूर बना भारतका अन्नदाता	149
11	प्रा. संगीता विष्णु भोसले	'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में मजदूर विमर्श	153
12	संजीवनी संदीप पाटील	'कांच के इधर-उधर' : मजदूरों की शहादत - सुधा अरोडा	156
13	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	'नीला आकाश' में चित्रित मजदूर विमर्श	158
मुस्लिम नारी विमर्श			
14	प्रा. अंजली महेश उबाळे	कृष्णा अनिहोत्री के उपन्यास में चित्रित मुस्लिम नारी विमर्श ('आना इस देश' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	
15	डॉ. जियाउर रहमान जाफरी	समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	



कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास में चित्रित मुसलिम नारी विमर्श
('आना इस देश' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

प्रा. अंजली महेश उबाळे

D. K. S. C. College, Ichalkaranji

प्रस्तावना -

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। जिसमें समाज का हुबहू प्रतिबिंब दिखाई देता है। समाज में घटीत होनेवली हर छोटी - मोठी घटना एवं प्रसंग से सजग संवेदनशील साहित्यकार प्रभावित होकर साहित्य सृजन करता है। चाहे वह घटना, प्रसंग किसी भी देश, किसी भी समाज एवं किसी भी व्यक्ति के साथ घटीत क्यों न हो, संवेदनशील तथा जागृत साहित्यकार उससे अछुता नहीं रह सकता। वह उस घटना एवं प्रसंग को अपनी सच्ची अनुभूति एवं कल्पनाशक्ति के माध्यम से शब्दबद्ध करने का यथाशक्ति प्रयास करता है। तभी तो कालजयी कृतियों का निर्माण होता है। अतः ऐसी ही कालजयी कृतियों के निर्माण से हिंदी साहित्य भंडार दिन-दिन समृद्ध होता जा रहा है। वास्तविकता इन साहित्यिक कृतियों का सृजन तत्कालीन समाज के अलग-अलग विषयों को केंद्र में रखकर किया गया है। जिनमें नारी भी एक है। 'नारी' को केंद्र में रखकर साहित्य सृजन करनेवाले साहित्यकारों की सूची लंबी है जिसमें मुसलिम नारी के जीवन पर भी यथार्थता से प्रकाश डाला गया है। इन साहित्यकारों में कृष्णा अग्निहोत्री का नाम आदर से लिया जाता है। उन्होंने अपने साहित्य में न केवल इक्कीसवीं सदी की ज्वलंत समस्याओं पर यथार्थता से प्रकाश डाला है बल्कि उनके समाधान को भी यथोचित प्रस्तुत किया है। वर्तमान युग में हर व्यक्ति कम-अधिक रूप से आतंकवाद, सांप्रदायिकता, धर्मांधता, जातिभेद, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरिबी, अत्याचार, व्यसनाधिनता, अवैध व्यवसाय आदि कई तरह की समस्याओं से ग्रस्त है। यह स्थिति केवल भारत की है ऐसी बात नहीं है बल्कि दुनिया भर के लगभग सभी देशों को इस भयावह वास्तविकता से गुजरना पड़ता है। यह तो सर्वज्ञात ही है कि, भारत बहुभाषाभाषी एवं बहुधर्मिय लोगों का देश है। जहाँ हर धर्म के अपने अलग-अलग संस्कार, रीति-रिवाज, प्रथा-परंपराएं एवं मान्यताएं हैं। धर्म संबंधी स्वतंत्र नियम कायदे कानून हैं जिसका पालन करना हर एक के लिए बंधनकारक माना जाता है। वास्तव में सभी धर्मों में स्त्री-पुरुष दोनों के हित के लिए समान नियम बनाये गये हैं जिनका पालन करना दोनों के लिए अनिवार्य है। किंतु वास्तविकता कुछ अलग ही है। पुरुषप्रधान संस्कृति के कारण हर धर्म में नारी आज भी शोषित ही है उसमें भी सांप्रदायिक भेदभाव, धार्मिक भेदभाव एवं बलात्कार जैसी अनैतिकता के कारण उसकी स्थिति और भी सोचनीय बनी है जिसका यथार्थ चित्रण कृष्णा अग्निहोत्री जी के 'आना इस देश' लघु उपन्यास में किया गया है।

'मुसलिम नारी विमर्श' पर विचार करते समय सबसे पहले हमें 'मुसलिम', 'नारी' और 'विमर्श' इन तीनों शब्दों से परिचित होना आवश्यक है। 'मुसलिम' का शब्दकोशीय अर्थ है "मुसलमान। लींग- स्त्री. हिंदुस्तान के सांप्रदायवादी मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करनेवली संस्था (1906 में स्था.)"1 और मुसलमान का शब्दकोशीय अर्थ है, "इस्लाम मजहब को माननेवाला, मुसलिम"2 अर्थात् इस्लाम धर्म का अनुयायी मुसलिम समाज। आधुनिक हिंदी शब्दकोश के अनुसार 'नारी' को 'यौना', 'यौनिता', 'सीमंतिनी', 'नीता', 'वामा', 'दारा', 'कलत्रा', 'महिला', 'अबला', 'वधु', 'जनी', 'जोशा'3 कहा गया है। 'विमर्श' शब्द का कोशीय अर्थ है, "किन्हीं दो व्यक्तियों के बीच का संवाद, बहस या सार्वजनिक चर्चा"4 स्त्री विमर्श की परिभाषा देते हुए उत्तराशती के साहित्य में लिखा गया है, "स्त्री विमर्श याने बौद्धिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक आदि महत्त्वपूर्ण स्तर पर विशिष्ट स्तर द्वारा किसी सामाजिक एवं पारंपारिक विषय पर गहरी सूझबूझ एवं समझदारी के साथ सोचविचार करना ही स्त्री-विमर्श है।"5 यहां पर हम 'मुसलिम नारी विमर्श' पर विचार करेंगे।

1) पुरुषप्रधान संस्कृति से शोषित नारी-

हर धर्म इंसान को इंसान होने के नाते एक दूसरे के साथ इंसानीयत से जीवन जिने की सिख देता है। किंतु आज भी समाज में धर्म- जाति, वर्ग पंथगत भेदभाव के साथ-साथ स्त्री-पुरुष में भी भेदभाव किया जाता है। मुसलिम समाज ने स्त्री-पुरुष दोनों के हित के लिए समान हक - अधिकार दिए हैं किंतु वास्तविकता कुछ और ही है। दोनों भी समाज के अभिन्न अंग होने के बावजूद नारी के लिए अलग और पुरुष के लिए अलग मापदंड को अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है। पुरुषप्रधान संस्कृति के इस दोहरे मापदंड से नारी आज भी शोषित है। 'आना इस देश' उपन्यास में लेखिका ने इसका यथार्थ चित्रण किया है। विवेक उपन्यास की भाँति का सुरैया पाकिस्तान में रहनेवाली पढ़ी-लिखी नारी है। किंतु शिक्षित एवं सुंदर होने पर भी वह अपना जीवनसाथी खोज नहीं पा सकती। परिवारवालों की इच्छा के आगे उसे अपनी इच्छा-आकांक्षाओं, भावनाओं को दबाना पड़ता है। इससे विपरीत पुरुष धर्म एवं शोहरत

के बल पर चार-चार बार जिसे चाहे उसे अपनी पत्नी बना सकता है। अतः एवं सुरैय्या की इजाजत के बिना उसके पिता नदीम उसका विवाह दुगुनी उम्रवाले फले से ही शादीशुदा परवेज से करा देते हैं। अतः नारी भावनाओं को समझनेवाली सुरैय्या की मा तरनुम इस रिश्ते का विरोध करते हुए कहती है, "हा देखा है, वे सुरैय्या से दुगुनी उम्र के हैं। एक बीवी दम तोड़ चुकी है, अब जनाब आप मर्दों को तो किसी भी उम्र में हमसफर चुनने का हक है, पर महिलाओं को तो उम्र कैद ही मिलती है। जब तक कोई शादी के लिए हाथ न मांगे चुप रहो" 6 अतः स्पष्ट है, मुसलिम नारी को अपना जीवनसाथी खुद पसंद करने का अधिकार नहीं दिया जाता उसे तो खुंटे की गाय की तरह किसी के भी घर बांध दिया जाता है। वास्तव में धर्म ने स्त्री और पुरुष दोनों के हित के लिए उचित अधिकार दिए हैं इस संदर्भ में डॉ. इनामदार जी कहते हैं, "इस्लाम ने जिस प्रकार पुरुषों को तलाक देने का अधिकार दिया है उसी प्रकार कुछ अवस्थाओं में स्त्रियों को भी पुरुषों से तलाक लेने के अधिकार प्रदान किए गए हैं जिसे 'खुलाह' कहा जाता है" 7 किंतु सुरैय्या पति के डर से तलाक नहीं ले सकती।

2) पति के अत्याचार की शिकार नारी -

नारी चाहे पिता के घर में हो या पति के, उस पर कई तरह की पाबंदियां लगाई जाती हैं। उसे अपनी इच्छा से जीवन जिने नहीं दिया जाता। फिर भी अगर वह इन सबका विरोध करते हुए अपनी खुशियां दूढ़ना चाहती है तब सबसे पहले उसका पति ही उस पर जुल्म ढाता है। विवेच्य उपन्यास की नायिका सुरैय्या एक अच्छी गायिका है अतः शादी के पश्चात् पत्रकार उसका टी.वी. पर इंटरव्यू लेता है और उसे अपनी गायकी पेश करने का अवसर मिलता है, तब उसका पति परवेज ही उस पर उंगली उठाता है। उसकी प्रशंसा करने की बजाय वह उसे बदसूरत बनाने की धमकी भी देता है। परवेज कहता है, "साहिबा, आप तो बहुत खुबसूरत लग रही थी? बड़ी बन संवर कर पब्लिक के सामने पेश हुईं----- सब समझता हूँ, पर इतना याद रहे, जरूरत पड़ी तो तुम्हारे चेहरे पर एसिड डलवा दूंगा" 8 लगता है, पति के अत्याचार की शिकार बनी सुरैय्या को उसके दबाव में जीवनयापन करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

3) संतान सुख से वंचित रहने के लिए विवश नारी-

संतान प्राप्ति हर नारी के लिए प्रकृति का सबसे बड़ा वरदान माना जाता है। जिसको पाकर वह स्वर्गसुख की अनुभूति करती है। अतः बच्चे के जन्म से लेकर लालन-पालन तक की सभी जिम्मेदारियों को वह हंसते-हंसते निभाती है एक माँ के लिए उसका बच्चा ही सबकुछ होता है। अतः उसको पाने के लिए वह बड़ी-से बड़ी दौलत को भी टूकराने के लिए तैयार होती है। किंतु नारी जीवन की विडंबना तो यह है कि, इतना सबकुछ करने के पश्चात् भी उसे संतानसुख से वंचित रहना पड़ता है जिसका यथार्थ चित्रण 'आना इस देश' उपन्यास में किया गया है। सुरैय्या परवेज से विवाह होने के पश्चात् बच्चे को तो जन्म देती है किंतु अत्याचारी एवं व्यभिचारी पति से झूटकारा पाने के लिए मायके में रहने के लिए विवश होती है अतः बालक को हासिल करने के लिए परवेज हर तरह की कोशिश करता है किंतु सुरैय्या जीवन का एकमात्र सहारा बच्चे को पाने के लिए पति द्वारा मिलनेवाली सारी जायदाद को छोड़ने के लिए तैयार होती है। केवल संतानसुख की अभिलाषा रखनेवाली सुरैय्या का नवजात शिशु मर जाता है उसे तो न बच्चे का सुख मिल पाता है और न ही पति की जायदाद का हिस्सा। "बच्चे का चेहरा देख शायद जिदगी बसर हो जाती पर अब वो एकदम सिकुड़कर किसी कटघरे में स्वयं कैद हो रही थी 9। अत्याचारी एवं चरित्रहीन पति के कारण सुरैय्या को अजीवन संतानसुख से वंचित रहना पड़ता है।

4) पुरुषों की गंदी मानसिकता की शिकार नारी-

पति के अत्याचार एवं पुत्र वियोग से पीड़ित सुरैय्या को विवशता वश दुर्बई में खाला के पास भेज दिया जाता है किंतु नारी की विवशता का अनुचित लाभ उठाने वाला जिजा उसके साथ गंदी हरकतें करता है, पत्नी के होते हुए भी सुरैय्या को पाना चाहता है नारी को केवल खिलौना माननेवाला जिजा सुरैय्या की भावनाओं के साथ भी खिलवाड़ करता है लेखिका कहती है, "किसी न किसी बहाने से वे कार से छोड़ने निकलते व सारे रास्ते उसकी तारीफ करते कभी कंधे तो कभी गला छूते कहते, 'जान तुम में व तुम्हारी आपा में कितना फर्क है। वो कठपुतली है और तुम भागती गुडिया। मैं तुम्हें बहुत सुखी रखूंगा तुम निकाह के लिए हा भर कह दो" 10। ऐसे स्वार्थी व्यभिचारी पुरुषों के कारण ही नारी को यातनामय जीवन जिना पड़ता है।

5) धर्माधता से शोषित नारी -

हर धर्म में धार्मिकता होनी चाहिए धर्माधता नहीं। किंतु आज वास्तविकता यह है कि, धर्म में धर्माधता ही बढ़ती जा रही है। मुसलिम धर्म में स्त्री और पुरुष दोनों को समान महत्त्व दिया है किंतु कुछ धर्मांध व्यक्तियों द्वारा दोहरे मापदंड को अपनाकर नारी का शोषण किया जाता है। सुरैय्या का पति परवेज चार-चार बार विवाह कर सकता है, किंतु पति के अत्याचार से शोषित, पीड़ित नारी सुरैय्या पुनः घर नहीं बसा सकती। भारत में रहने वाला अबीर जब उसे फिर से सेटल होने के लिए कहता है तब सुरैय्या कहती है, "वैसे

भी मुसलिम औरते गोरी, काली, पढी-लिखी कैसे भी हो, उन्हें कुराण शरीफ का वास्ता दे वैसी ही जिने की इजाजत है, जरा लाईन से हटे तो फरमान में दंड, सजा, बेरहमी, पत्थरबाजी व मौत ही पल्ले पडती है" 11। अतः स्पष्ट है मुसलिम नारी को धर्म का वास्ता देकर शोषण किया जाता है।

6) पंथगत भेदभाव की शिकार नारी -

धर्म-धर्म के अंतर्गत भेदभाव से पुरा मानव समाज आक्रांत है किंतु एक ही धर्म के अंतर्गत भी अनेक पंथों में समाज को विभाजित किया जाता है। मुसलमान धर्म में 'शिया' और 'सुन्नी' नामक दो पंथ हैं " शिया का अर्थ 'अल्ली' संप्रदाय का अनुयायी होता है। 'खलिफा' के अनुयायी सुन्नी कहे जाते हैं -----दोनों सम्प्रदायों में कोई मौलिक विरोध नहीं है। फिर भी दोनों में खलिफा, भाग्यवाद, आत्मा की स्वतंत्रता आदि विषयों पर घोर वाद-विवाद होने लगा। दोनों में कटुता के भाव भी आने लगे" 12। परितक्या नारी सुरैय्या से शिया पंथ का व्यक्ति बहुत-सारी उलझनों के बाद भी शादी करने के लिए तैयार होता है। सुरैय्या की दोस्त गीत भी उसे शादी करके सुखी वैवाहिक जीवन को अपनाने की सलाह देती है किंतु सुरैय्या के माता-पिता इसके लिए बिल्कूल तैयार नहीं होते। वे कहते हैं, "शिया से शादी करो तो मुल्क में मत लौटना। हम तुम्हारे लिए मर गए" 13। लगता है अंतर्गत भेदभाव के कारण सुरैय्या को अविवाहित रहने के लिए विवश होना पडा है शिया-सुन्नी के आपसी भेदभाव से पीडित नारी सुरैय्या कहती है " सुन्नी व शिया भी एक-दूसरे के खून के प्यासे। पाकिस्तान के अनेक इलाकों में, रिश्तेदारों, खानदानों तथा समाज के गलत रिवाजों को अगर औरत चुनौती देती है, तो उसे भी और उन लडकियों को भी मार डालने की प्रथा कबिलाईयों में अब भी बरकरार है, जिसे काकरी कहते हैं" 14। मनुष्य हित में घातक इन गलत प्रथाओं के चलते नारी जीवन दुःखमय बना है।

7) पुरानी गलत प्रथा-परंपराओं की शिकार नारी -

धर्म चाहे हिंदु हो मुसलिम हो या अन्य कोई भी, उनसे प्राचीन काल से लेकर आज तक चलती आ रही कई पुरानी, गलत रूढ़ी-प्रथा, परंपराएं पाई जाती हैं जिनके कारण समाज खोखला बनता जा रहा है। उसमें भी नारी की स्थिति और भी सोचनीय है। इन प्रथाओं में बालविवाह एक ऐसी ही प्रथा है जिसमें लडकियों को बड़ी होकर जीवनसाथी पसंद करने का अवसर ही न मिल सके इसलिए उनका विवाह बाल्यावस्था में ही कर दिया जाता है। "पाकिस्तान में भी कबाइली इलाकों में तो प्रेम के नाम पर खुनी जंग छिड जाती है। इसलिए जंग से बचने के लिए लडकियों का विवाह छोटी उम्र में ही कर दिया जाता है यदी लडकी अपने पति से छुप कोई नाजायाज प्रेम करे या रिश्ता जोडे तो उस पुरुष व औरत को मार डालते हैं यह कारोकारी प्रथा (बुरी औरत) व (बुरा आदमी) तो अरब व इराण में भी है" 15। दुनिया के हर कोने में नारी का अमानवीय शोषण किया जाता है। उसकी नारी सुलभ भावनाओं को उसके साथ ही दफनाया जाता है।

8) अकेलेपन में जीवनयापन करने के लिए विवश नारी -

हर इंसान को जीवनपथ पर चलते समय एक अच्छे हमसफर की आवश्यकता होती है जो उसके सुख-दुःख में साथ देकर उसका खयाल रखता है। किंतु विवेच्य उपन्यास की सुरैय्या विवाह के पश्चात् भी पति एवं पुत्र प्रेम से वंचित रहती है। भारत आने पर अबीर नामक हिंदु युवक से प्रेम करती है। अबीर का विवाह पहले से ही मनु से तय हुआ है अतः सुरैय्या अबीर से शादी करके उन दोनों के बीच नहीं आना चाहती। मनु से विवाह करके अबीर पारिवारिक जीवन बिता सकता है पर सुरैय्या को तो जीवनभर अकेलेपन को झेलना पडता है। सुरैय्या कहती है, "मैं भी नहीं चाहूंगी कि मेरे लिए तुम आग पर ही चला यूँ तो किसी भी फितरत हो मुहबत कोई मिटा नहीं सकता अबीर क्योंकि, जज्बात न तो हिंदु हैं ना मुसलमान हमारे यहाँ पीर, पैगंबर मर्द होते हैं औरते नहीं। वरना मैं भी पीर बनकर खुदा की बंदगी में उम्र काट देती" 16। लगता है आतंकवाद, सांप्रदायिकता, धर्मांधता आदि कई कारणों से नारी को अकेलेपन में जीवनयापन करने के लिए बाध्य होना पडता है।

9) आतंकवादी हमलो की शिकार नारी -

वर्तमान युग में दिन-ब-दिन आतंकवाद फैलता जा रहा है इसका मूल सांप्रदायिकता एवं धर्मांधता में पाया जाता है। आगे दिन हो रहे हिंदु-मुसलिम दंगे-फसादों के कारण दोनों देशों के लोग दहशद में जी रहे हैं। आतंकवादी हमलो से देश की ब्रेकसूर आम जनता मारी जाती है। पाकिस्तान में रहनेवाली सुरैय्या भारत में नाना-नानी से मिलने आती है, तब उसकी मुलाकात हिंदु धर्म के अबीर से होती है। दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं किंतु धर्मांधता, पुरानी गलत मान्यताएं एवं सांप्रदायिकता के कारण वे दोनों विवाह नहीं कर पाते। अतः भारत आई सुरैय्या वापस पाकिस्तान जाने लगती है तब भारत-पाकिस्तान की सीमा पर आतंकवादियों द्वारा किए गए बलात्कार की वह शिकार होकर पागल बन जाती है। आतंकवादियों द्वारा किए गए अमानवीय अत्याचार से पीडित नारी सुरैय्या

आखिर भारत-पाकिस्तान दोनो देशो की सीमा पर हाथ रखकर मर जाती है। दोनो देशो में सुख, शांती अमन की चाह रखनेवाली सुरेय्या को अपनी जान गवां नी पडती है

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि ,इक्कीसवीं सदी के साहित्यकारो की लंबी सूची में कृष्णा अग्निहोत्री जी स्थान अनन्यसाधारण है। सन 2014 में प्रकाशित 'आना इस देश ' उपन्यास में लेखिका ने अनेक ज्वलंत समस्याओ पर प्रकाश डालकर उसका यथोचित समाधान भी प्रस्तुत किया है। मुसलिम नारी जीवन संघर्ष के साथसाथ आतंकवादी हमले, धर्म-पंथगत भेदभाव, धर्मांधता, सांप्रदायिक दंगेफसाद स्त्री-पुरुष भेदभाव, अन्याय-अत्याचार एवं आतंकवादियो द्वारा मुसलिम नारी पर किए गए पशुतुल्य अमानवीय अत्याचार की दर्दनाक व्यथा को कथा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। पुरुषप्रधान संस्कृति पुरुषो की गंदी मानसिकता पति द्वारा किया जानेवाला शोषण, धर्म एवं पंथगत भेदभाव पुरानी, गलत रूढी-प्रथा –परंपराए, अकेलापन आदि कई कारणो से मुसलिम नारी आज भी शोषित-पीडित, यातनामय जीवनयापन करने के लिए विवश है, जिसका मर्मस्पर्शी चित्रण विवेच्य उपन्यास में मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1) संपा.कालिकाप्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दलाल श्रीवास्तव – 'बृहत हिंदी कोश', पृ. क्र. 909 ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2013
- 2) संपा. कृष्णाकांत दीक्षित, सुर्यनारायण उपाध्याय – मानक विशाल हिंदी शब्द कोश, पृ. क्र. 773, कमल प्रका.,दिल्ली, 2015
- 3) गोविंद चातक – आधुनिक हिंदी शब्दकोश पृ. क्र. 308
- 4) सु. मो. शहा – राष्ट्रावाणी, द्वैमासिक मार्च-अप्रैल, पृ. क्र. 67, 2011
- 5) वही – पृ. क्र. 67
- 6) कृष्णा अग्निहोत्री – 'आना इस देश', पृ. क्र. 18 अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2014
- 7) डॉ.सय्यद अब्दु ल मजिद निजामुद्दीन इनामदार- 'हिंदी उपन्यासो में मुस्लिम समाज' पृ. क्र. 114, रीली प्रका.,कानपुर, प्र. सं. 2013
- 8) कृष्णा अग्निहोत्री – 'आना इस देश', पृ. क्र. 20 अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2014
- 9) वही – पृ. क्र. 21
- 10) वही – पृ. क्र. 22
- 11) वही – पृ. क्र. 32
- 12) प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड, डॉ. विद्यासागर सिंह – 'धर्म एक स्वरूप अनेक' भाग 2, पृ. क्र. 82, एम. के. पब्लिकेशन, जयपुर, प्र. सं. 2012
- 13) कृष्णा अग्निहोत्री – 'आना इस देश' पृ. क्र. 33 अमन प्रका., कानपुर प्र. सं. 2014
- 14) वही – पृ. क्र. 46
- 15) वही – पृ. क्र. 39
- 16) वही – पृ. क्र. 59



Design and Implementation of Genetic Fuzzy Controller for Split Air-Conditioner Control Based on Fanger's PMV Index

Chandrakant Balkrishna Patil*

Department of Electronics

D. K. A. S. C. College, Ichalkaranji

(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)

Kolhapur 416115, Maharashtra, India

cbpatil_electronics@rediffmail.com

R. R. Mudholkar

Shivaji University

Kolhapur 416004, Maharashtra, India

rrm_eln@unishivaji.ac.in

Received 18 May 2019

Accepted 21 October 2019

Published 9 December 2019

This paper reports the design and implementation of genetically optimized fuzzy logic controller (GAFLC) for split air-conditioner based on the principle of Fanger's Predicted Mean Vote (PMV) index. The proposed control strategy is aimed at improving the indoor thermal environment (ITE) at houses, offices, libraries, hotels, etc. because it plays a vital role in determining the health, physical and mental productivity of the occupants. The GAFLC has been implemented in MATLAB Simulink for computer simulation and also on hardware platform using the commercially available 8-bit ATmega-328 microcontroller through embedded C-coding for real practice. One part of the designed control algorithm examines the values of activity level, clothing insulation, air velocity, and relative humidity and decides the comfort temperature value to be set such that the PMV and PPD indices get satisfied. The other part generates a control signal to the air-conditioner compressor to maintain that temperature. From the simulation results it is seen that the generated comfort temperature values are in the range of 24.4–26.55°C for various combinations of environmental and personal parameters, which are well above the general temperature set value of 20°C. This indicates the scope for reducing energy consumption to a greater extent. Also the PMV index lies in the range of -0.23 to +0.36 with untuned fuzzy inference system (FIS), and in the range of -0.32 to +0.14 with genetic algorithm (GA)-tuned FIS, which are acceptable comfort levels that human physiology can endure with more satisfaction. The experimental results show that GAFLC has generated a comfort temperature value for specified input parameters and also maintained the room temperature at that value to keep the thermal ambience more satisfactorily.

Keywords: Fuzzy logic control; genetic algorithm; split air-conditioning system; Fanger's PMV index; MATLAB Simulink.

*Corresponding author.



1. Introduction

Human beings have always attempted to create a thermally comfortable environment. This is manifested in building traditions and architectures, season-wise clothing, and the use of different heating and cooling systems around the world — from ancient times to the present day.

In modern era, people are spending much time in buildings. So the indoor thermal environment (ITE) has to be maintained at a standard level as it plays a significant role in determining the life quality of occupants.¹ The American Society of Heating, Refrigerating and Air-Conditioning Engineers (ASHRAE) has published the standards and guidelines for that. According to ASHRAE, thermal comfort is a subjective assessment by a person expressing his/her satisfaction with his/her ITE.² The concept of thermal comfort and its study started in the early decades of the twentieth century. The research in this area continues and many of the researchers formulated thermal comfort indices in different forms based on empirical and analytical methods. The most recognized and best understood one is the Predicted Mean Vote (PMV) index. The index was developed by Povl Ole Fanger, Physiologist at the Technical University of Denmark, in early 1970 by conducting several climate chamber experiments, and he deduced the equations which correlate the variables. According to Fanger, human comfort is based on four environmental parameters, viz. air temperature, mean radiant temperature (MRT), air velocity, and air humidity, and two personal factors, such as activity level and clothing resistance.³ The PMV correlation in mathematical form developed by Fanger is difficult to implement in practical use. Thus providing thermal comfort for occupants in buildings using conventional controllers is really a challenging task. But fuzzy logic comes into play where a rule-base is created from the common sense and expert knowledge database to obtain comfort environment.

Even though thermal comfort is influenced by many variables, but till now split air-conditioning systems in buildings are based on a single temperature control loop.⁴ Thus such system cannot afford good indoor environmental quality.

2. Related Works

Hasan *et al.* studied the impact of different types of environmental and personal parameters included in the PMV index on thermal comfort. They generated

the two-dimensional (2D) and three-dimensional (3D) comfort zone plots for different combinations of parameters. From simulated results they found that the personal parameters such as clothing and metabolic rate have the highest impact. They measured the metabolic rate of an occupant during different activities using a Fitbit wearable device and concluded that control accuracy can be enhanced with wearable sensors.⁵

Pragnya and Papachary applied a feed-forward feedback control and a digital self-tuning control to maintain satisfactory thermal comfort based on the PMV index with more than 30% energy savings compared to the conventional temperature setting. To determine thermal comfort temperatures, an adaptive neuro-fuzzy inference system and a particle swarm algorithm were applied.⁶

Dounis *et al.* deduced a simulator model accomplished with the room model, the window model, outdoor climate model, the indoor relative humidity model (RHM), and the PMV model. They designed a fuzzy reasoning expert system, where the concepts of thermal and visual comfort were used as fuzzy control variables that were applied in the building for the achievement of thermal and visual comfort. The simulated results show that the fuzzy system maintained the PMV index in the -0.2 – 0.2 range.⁷

Hamidi *et al.* have developed a fuzzy control model based on human sensation. The results were in good agreement with Fanger's PMV index.⁸

An attempt was made by Gouda *et al.* to design a fuzzy logic controller (FLC) for HVAC system that could achieve a thermal comfort based on Fanger's PMV and Predicted Percentage Dissatisfied (PPD) indices. The simulated results with design constraints as zero PMV and 5% PPD show betterment in the thermal comfort action with 20% reduction in energy compared to conventional controllers.⁹

Ku *et al.* carried out an experiment for thermal comfort based on Predicted Mean Vote and energy saving using four control methods. They concluded that inverse PMV model with FF-fuzzy had less standard deviation of PMV (0.11), less value of Max PMV (0.5), the percentage of PMV period within neutral reading being 100%, and the energy saving of 37.3%.¹⁰

3. Designing of Fuzzy Logic Controller

Now a days fuzzy logic is replacing the conventional methods and becoming a formal methodology. Fuzzy logic assists to represent, manipulate, and



implement human heuristic knowledge in decision-making and also in control system.¹¹⁻¹³ The idea of modeling the human thought process in terms of linguistic values rather than numbers brought the fuzziness into the system theory and development of a new class of systems called 'Fuzzy Systems'.^{14,15} The basic concept behind FLC is to employ the expert knowledge and experience of a human operator for designing a controller. This expertise can be used for identification of linguistic variables, formulation of fuzzy control rules, and selection of fuzzy appropriate reasoning methods.¹⁶ The fuzzy logic control is an algorithm for process control as a fuzzy relation between the information on the condition of the process to be controlled and the control action.¹⁷ The processing structure of fuzzy logic control scheme is framed in terms of fuzzification, inference, and defuzzification modules.

3.1. Fuzzy inference systems

In this work two fuzzy inference systems (FISs) have been designed; the FIS-I will generate the comfort temperature value to be set and FIS-II generates a control action signal that will maintain room temperature to that value. The designed MISO FIS-I shown in Fig. 1 has four input fuzzy variables: activity, clothing, air velocity, and humidity; and one output fuzzy variable: temperature. The Universe of Discourse (UoD) for variables pertaining to subsets of each variable is depicted as shown in Tables 1-5. For example, the fuzzy set *typical* has been assigned a mean value of 0.5 clo by considering that the person can wear the clothing items such as Brief = 0.04 clo, Underwear sleeveless shirt = 0.06 clo, Light shirt with long sleeves = 0.2 clo, and Light trousers = 0.2 clo.

3.2. GA optimization

The GA optimization of FISs is carried out by developing various functions in MATLAB M-files to create initial population of MFs for each variable, then to generate, evaluate, and find the fittest FIS. The functional flow of genetic tuning of MFs of FISs is shown in Fig. 2. The ranges of MFs of each variable are encoded as real numbers in the chromosomes. Table 6 shows the appearance of chromosomes in the population. Figure 3 shows the MFs

Table 1. Fuzzy sets for the input variable *activity* (met).

MF No.	Fuzzy sets	Intervals	
		Fuzzy only	GA-tuned
1	reading	[1 1 1.1]	[1 1 1.05]
2	typing	[1 1.1 1.2]	[1.01 1.105 1.2]
3	sedentary	[1.1 1.2 1.2]	[1.13 1.2 1.2]

Table 2. Fuzzy sets for the input variable *clothing* (clo).

MF No.	Fuzzy sets	Intervals	
		Fuzzy only	GA-tuned
1	typical	[0.5 0.5 0.6]	[0.5 0.5 0.55]
2	normal	[0.5 0.6 0.7]	[0.54 0.615 0.69]
3	medium	[0.6 0.7 0.7]	[0.64 0.7 0.7]

Table 3. Fuzzy sets for the input variable *air velocity* (m/s).

MF No.	Fuzzy sets	Intervals	
		Fuzzy only	GA-tuned
1	stagnant	[0 0 0.15]	[0 0 0.13]
2	unnoticed	[0 0.15 0.3]	[0.09 0.16 0.23]
3	pleasant	[0.15 0.3 0.3]	[0.21 0.3 0.3]

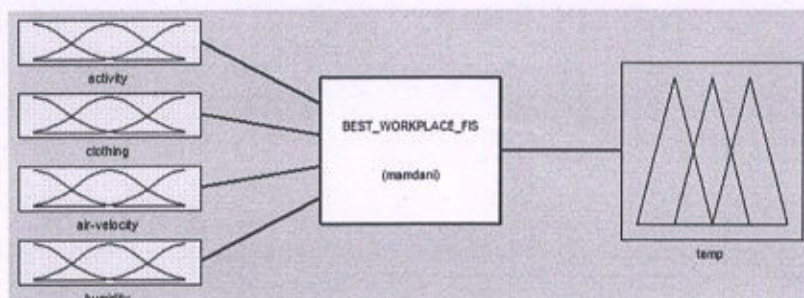


Fig. 1. MISO FIS-I.

Table 4. Fuzzy sets for the input variable *humidity* (%).

MF No.	Fuzzy sets	Intervals	
		Fuzzy only	GA-tuned
1	dry	[20 20 50]	[20 20 48.37]
2	normal	[20 50 80]	[35.52 47.4 59.27]
3	sticky	[50 80 80]	[52.08 80 80]

Table 5. Fuzzy sets for the output variable *temperature* (°C).

MF No.	Fuzzy sets	Intervals	
		Fuzzy only	GA-tuned
1	low	[24 24 26]	[24 24 25.38]
2	medium	[24 26 28]	[24.1 25.59 27.09]
3	high	[26 28 28]	[26.05 28 28]

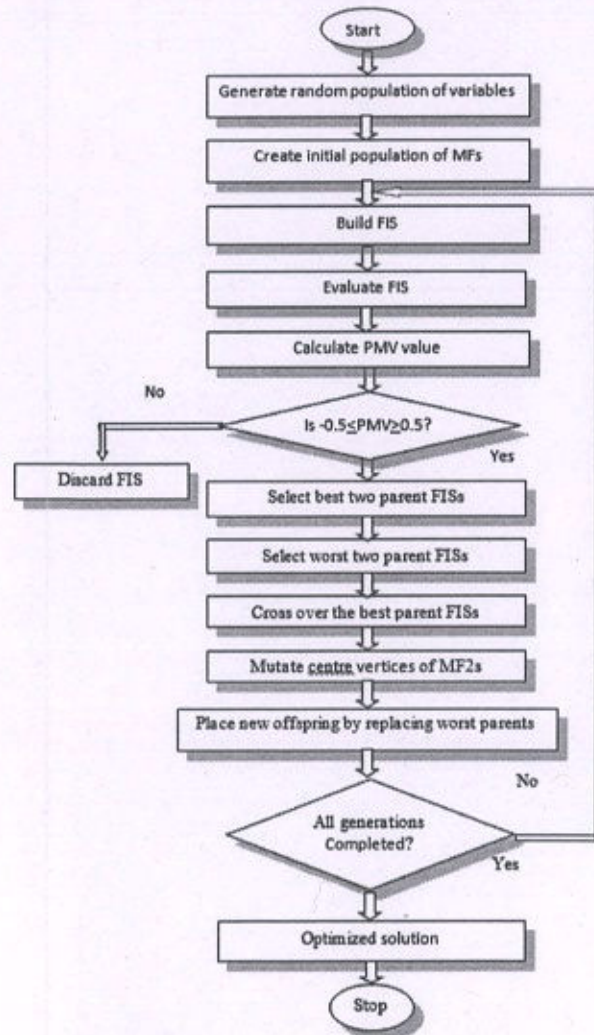


Fig. 2. Functional flow of genetic tuning of the FIS (PMV index).

Table 6. Chromosomes of the input variable *act* (met).

<i>act</i>								
Reading activity			Typing activity			Sedentary activity		
Left vertex	Central vertex	Right vertex	Left vertex	Central vertex	Right vertex	Left vertex	Central vertex	Right vertex
1	1	b	a	c	e	d	1.2	1.2

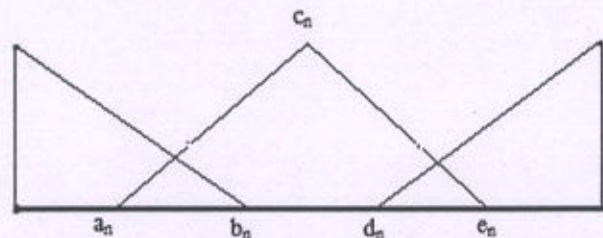


Fig. 3. MFs of chromosomes with amendable vertices for the FIS.

of chromosomes with amendable vertices $a_n, b_n, c_n, d_n,$ and e_n for variables. The subscript $n = 1, 2, 3, \dots$ depicts the variable numbers.

3.3. Rule-base

The Rule-base is designed by 81 rules as follows:

- (1) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is stagnant and humidity is dry THEN temp is high.*
- (2) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is stagnant and humidity is normal THEN temp is med.*
- (3) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is stagnant and humidity is dry THEN temp is med.*
- (4) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is unnoticed and humidity is sticky THEN temp is high.*
- (5) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is unnoticed and humidity is normal THEN temp is high.*
- (6) *IF activity is reading and clothing is typical and air-velocity is unnoticed and humidity is sticky THEN temp is med.*
- (7) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is pleasant and humidity is dry THEN temp is high.*



- (8) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is pleasant and humidity is normal THEN temp is high.*
- (9) *IF activity is reading and clothing is typical and air velocity is pleasant and humidity is sticky THEN temp is med.*

3.4. Fuzzy membership functions

The fuzzy membership functions after applying manual tuning as well as GA-based tuning are shown in Figs. 4–8.

3.5. Simulink model for MISO FIS

The Simulink model of genetically optimized FLC (GAFLC) system created in MATLAB is shown in

Fig. 9. The FIS-I named “PMV-based temp” generates a temperature value such that the PMV and PPD indices get satisfied. This value is passed on to FIS-II named “Temp error to count” as a set temperature. The FIS-II generates a count value applied as an input to the split air-conditioner to achieve a set value of temperature at the workplace.

3.6. Mathematical model of the system

The thermal model of split air-conditioner and prototype room is modeled using energy balance equations.¹⁸

The room temperature variation is given by

$$\frac{dT_{\text{room}}}{dt} = \frac{1}{M_{\text{roomair}}} C_{\text{air}} \times \left(\frac{dQ_{\text{extracted}}}{dt} - \frac{dQ_{\text{gain}}}{dt} \right), \tag{1}$$

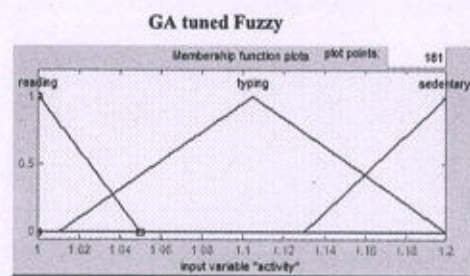
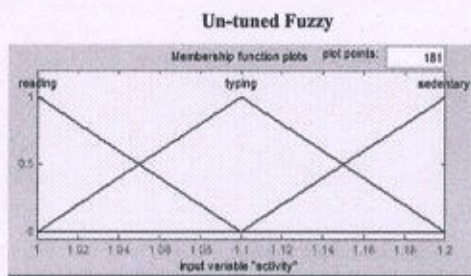


Fig. 4. Membership functions for the input variable *activity* (met).

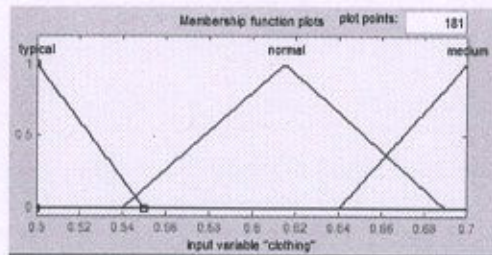
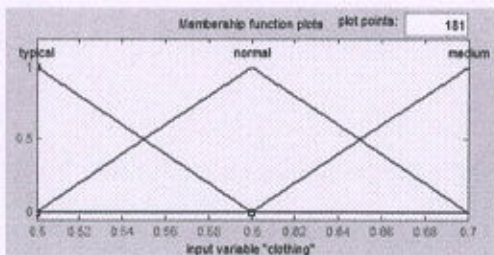


Fig. 5. Membership functions for the input variable *clothing* (clo).

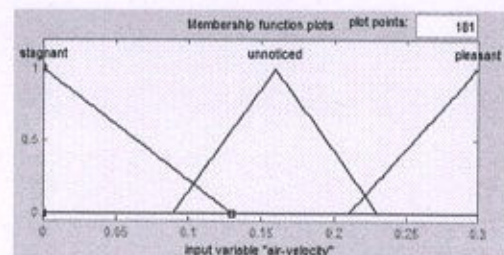
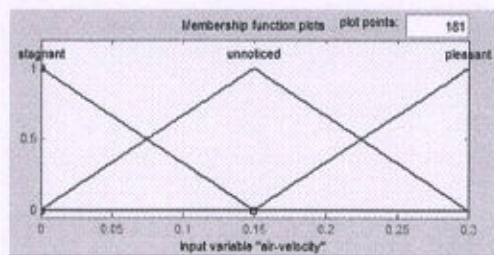


Fig. 6. Membership functions for the input variable *air velocity* (m/s).



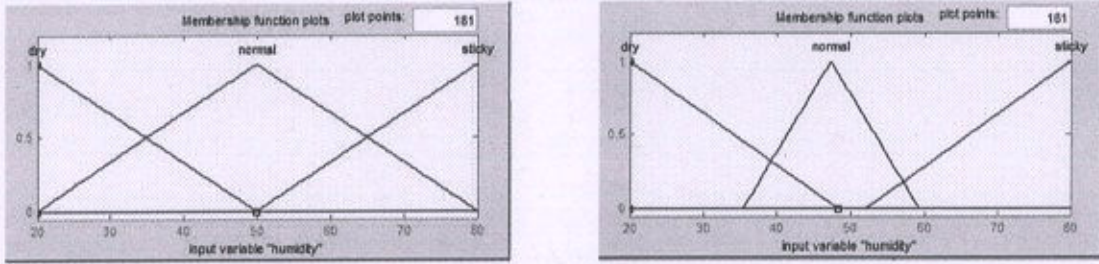


Fig. 7. Membership functions for the input variable *humidity (%)*.

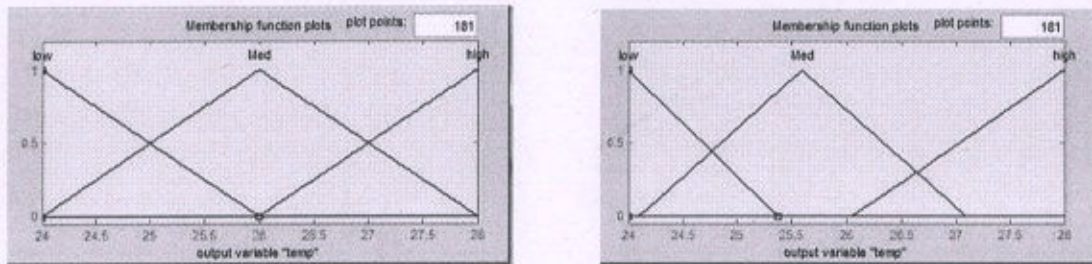


Fig. 8. Membership functions for the output variable *temperature (°C)*.

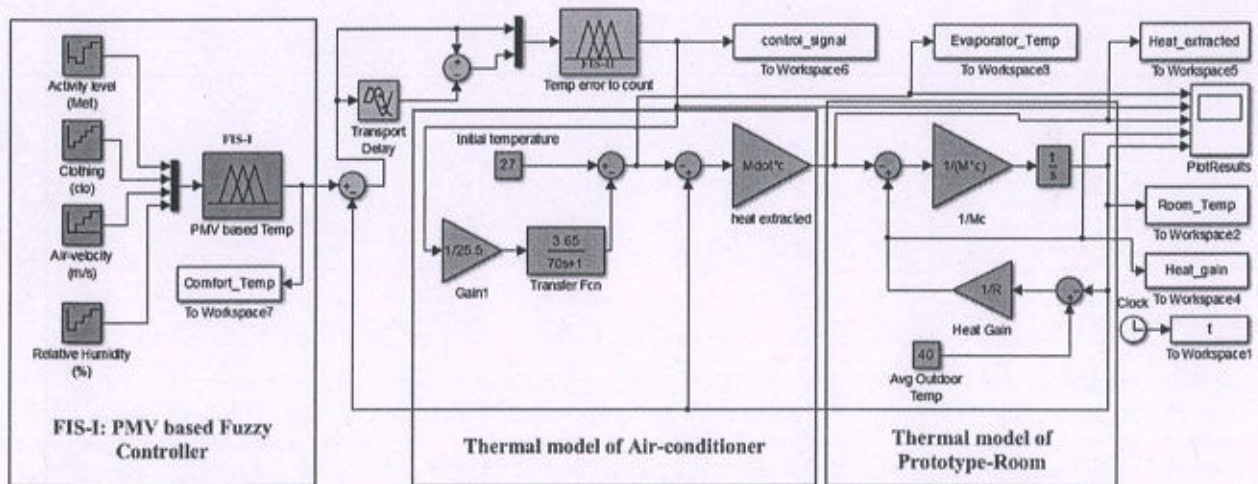


Fig. 9. MATLAB Simulink model of the plant having the prototype room and air-conditioner with fuzzy logic controller.

where T_{room} is the room temperature ($^{\circ}C$), $M_{roomair}$ is the mass of air inside the room (kg), C_{air} is the specific heat of air ($J/kg \cdot ^{\circ}C$), $Q_{extracted}$ is the heat energy extracted from the room by air-conditioner (J), and Q_{gain} is the heat energy that entered inside the room through the wall by conduction (J).

The rate of thermal energy gain through the walls is modeled using Fourier's law of conduction as

given by the following equation:

$$\frac{dQ_{gain}}{dt} = \left(\frac{T_{room} - T_{outside}}{R} \right), \quad (2)$$

where $T_{outside}$ is the outside temperature ($^{\circ}C$) and R is the Thermal resistance of wall.

$$R = \left(\frac{t}{kA} \right), \quad (3)$$



where t is the thickness of wall (m), k is the thermal conductivity value of thermocol ($W/m \cdot ^\circ C$), and A is the Area of wall (m^2).

Since the evaporator is placed inside the room, the refrigerant through it absorbs the heat from the room.

Thus the thermal energy extracted ($Q_{\text{extracted}}$) by the air-conditioner from the room is modeled by using the mass flow rate of air as shown in the following:

$$\frac{dQ_{\text{extracted}}}{dt} = \frac{dM_{\text{air}}}{dt} C_{\text{air}} (T_{\text{ac}} - T_{\text{room}}), \quad (4)$$

where dM_{air}/dt is the mass flow rate of air (kg/s) and T_{ac} is the evaporator coil temperature ($^\circ C$).

Since the mass flow rate of air is kept constant, then

$$\frac{dQ_{\text{extracted}}}{dt} = M_{\text{air}} C_{\text{air}} (T_{\text{ac}} - T_{\text{room}}), \quad (5)$$

since T_{ac} is a varying quantity and is dependent on the speed of compressor, surrounding temperature, and mass flow rate of air. It is derived by obtaining the first-order transfer function of air-conditioner system as

$$G(s) = \frac{K}{Ts + 1} = \frac{3.65}{70s + 1}. \quad (6)$$

Here, $K = \text{change in temperature/change in input step signal} = (33-12)/5.75 = 3.65$ and T is the time constant = 70 s.

The simulated results for the generated temperature values for different combinations of four input variables with GA-tuned FIS-I and untuned FIS-I are shown in Figs. 10 and 11. Table 7 shows the

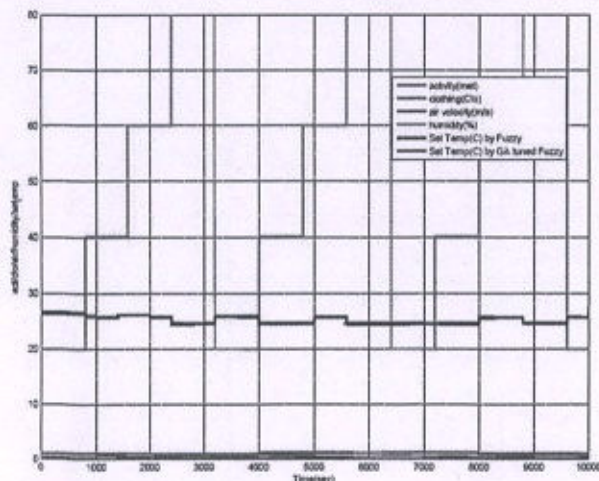


Fig. 10. Simulated results for the generated temperature values for different combinations of variables.

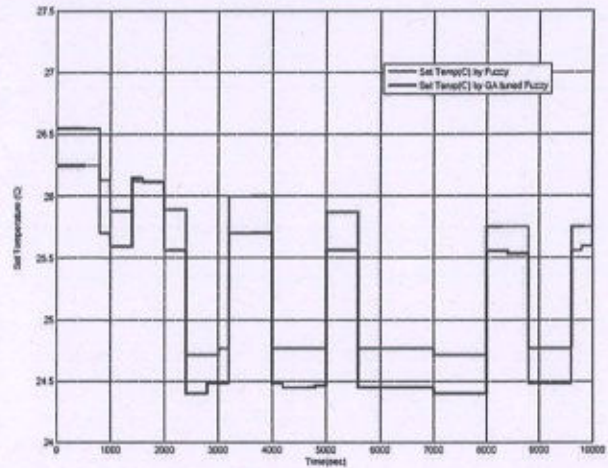


Fig. 11. Magnified view of the generated temperature values with GA-tuned FIS as well as untuned FIS.

PMV and PPD values for various combinations of input variables. These values are plotted in Figs. 12 and 13, respectively.

4. Hardware Implementation

The world of embedded control domain is experiencing a dominance of fuzzy logic technology that is becoming the most rapidly growing successful technology implemented for the development of sophisticated control systems. Even household appliances are advertised as being intelligent with the help of the built-in fuzzy logic.

Fuzzy logic control algorithm can be implemented on different hardware platforms in various ways. Target hardware platforms may be digital signal processor (DSP),¹⁹ PC,^{20,21} Fuzzy Microcontroller^{22,23} or general-purpose microcontroller²⁴⁻²⁹; each one having some advantages as well as some disadvantages. The FLC implemented on DSP or PC can process floating-point fuzzy calculations quickly in real time and seems better, faster, and more accurate during control action.³⁰ Such hardware provides a lot of flexibility for the programmer. The drawback is its physical size which causes the system to be bulky and more expensive. The use of fuzzy microcontroller from MOTOROLA such as 68HC812A4 provides ease of implementation and is less expensive, but support tools lack the generalization and mathematical reasoning. The use of general-purpose microcontroller provides faster and cheaper implementation. Since microcontroller



Table 7. PMV and PPD values for various combinations of input variables at discrete instances with fuzzy and GA-tuned fuzzy controllers.

Time (s)	Act (met)	Cloth (clo)	Air velocity (m/s)	RH (%)	Fuzzy FIS			GA-tuned fuzzy FIS		
					Set temperature (°C)	PMV	PPD	Set temperature (°C)	PMV	PPD
400	1.05	0.5	0	20	26.25	-0.02	5	26.55	0.09	5
900	1.05	0.5	0	40	26.15	0.12	5	25.7	-0.04	5
1300	1.05	0.55	0	40	25.9	0.13	5	25.6	0.02	5
1500	1.05	0.55	0.1	40	26.15	0.15	5	26.1	0.14	5
2100	1	0.6	0.1	60	25.9	0.22	6	25.55	0.1	5
2600	1	0.6	0.1	80	24.72	-0.03	5	24.4	-0.14	5
2900	1	0.6	0.2	80	24.72	-0.03	5	24.5	-0.11	5
3300	1	0.65	0.2	20	26	-0.23	6	25.7	-0.32	7
3700	1	0.65	0.2	20	26	-0.23	6	25.7	-0.32	7
4100	1.15	0.7	0.2	40	24.78	-0.02	5	24.48	-0.1	5
5300	1.15	0.5	0.3	60	25.88	-0.16	6	25.58	-0.25	6
5900	1.15	0.5	0	80	24.78	0.17	6	24.48	0.07	5
6100	1.2	0.55	0	80	24.78	0.36	8	24.48	0.27	6
6700	1.2	0.55	0	20	24.78	-0.06	5	24.48	-0.14	5
7100	1.2	0.6	0.1	20	24.72	-0.03	5	24.4	-0.11	5
7400	1.2	0.6	0.1	40	24.72	0.11	5	24.4	0.02	5
7900	1.2	0.6	0.1	40	24.72	0.11	5	24.4	0.02	5
8100	1.05	0.65	0.1	60	25.75	0.37	8	25.55	0.3	7
8700	1.05	0.65	0.2	60	25.75	0.14	5	25.3	0	5
9100	1.05	0.7	0.2	80	24.78	0.09	5	24.48	0	5

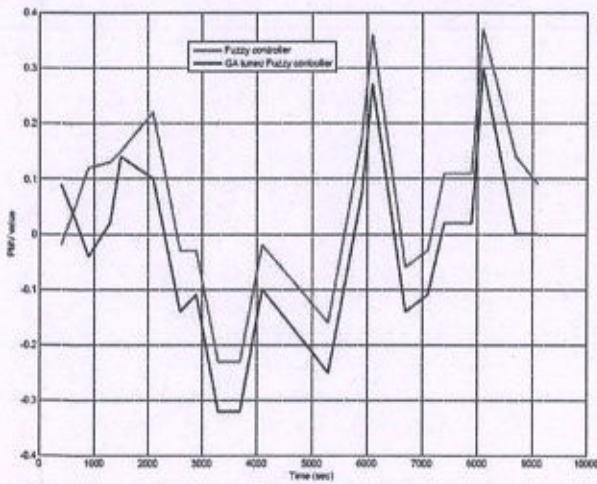


Fig. 12. PMV values for various combinations of input variables.

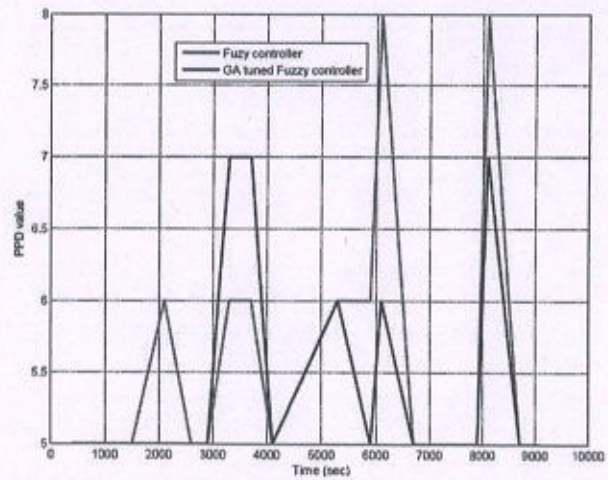


Fig. 13. PPD values for various combinations of input variables.

offers integration of CPU, memory, and peripheral devices in a single chip, the control system becomes compact.

4.1. Design approach

A schematic diagram of experimental setup is as shown in Fig. 14. An isolated prototype room of

dimensions 0.61 m × 0.76 m × 0.91 m made from thermocol with a thickness of 0.038 m is considered into which an evaporator unit of split AC is mounted. Split AC has various components for vapor compression cycle: a compressor, a condenser, an evaporator, metering device, and fans. The schematic design of GAFLC is shown in Fig. 15, where LM35 IC sensors are used to sense the room



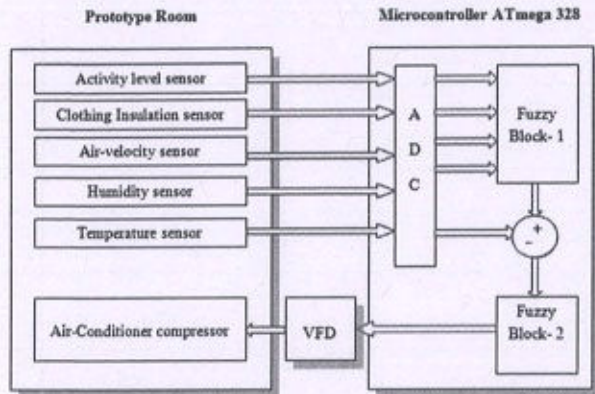


Fig. 14. Schematic diagram of the experimental setup for thermal comfort control.

temperature and evaporator coil temperatures, which output the corresponding analog voltages. Also the relative humidity sensor HS 1101 is used to sense the room's relative humidity.

The signals related to activity level, clothing insulation, and air velocity are generated using potentiometer arrangements. The analog outputs from all these sensors are then converted into digital signals at the ADC section. The converted digital outputs after proper scaling are given as inputs to the FIS implemented in the microcontroller with embedded C-language.

FIS then produces a crisp (count) value according to rule-base and inference. Microcontroller generates a pulse-width modulated (PWM) signal proportional

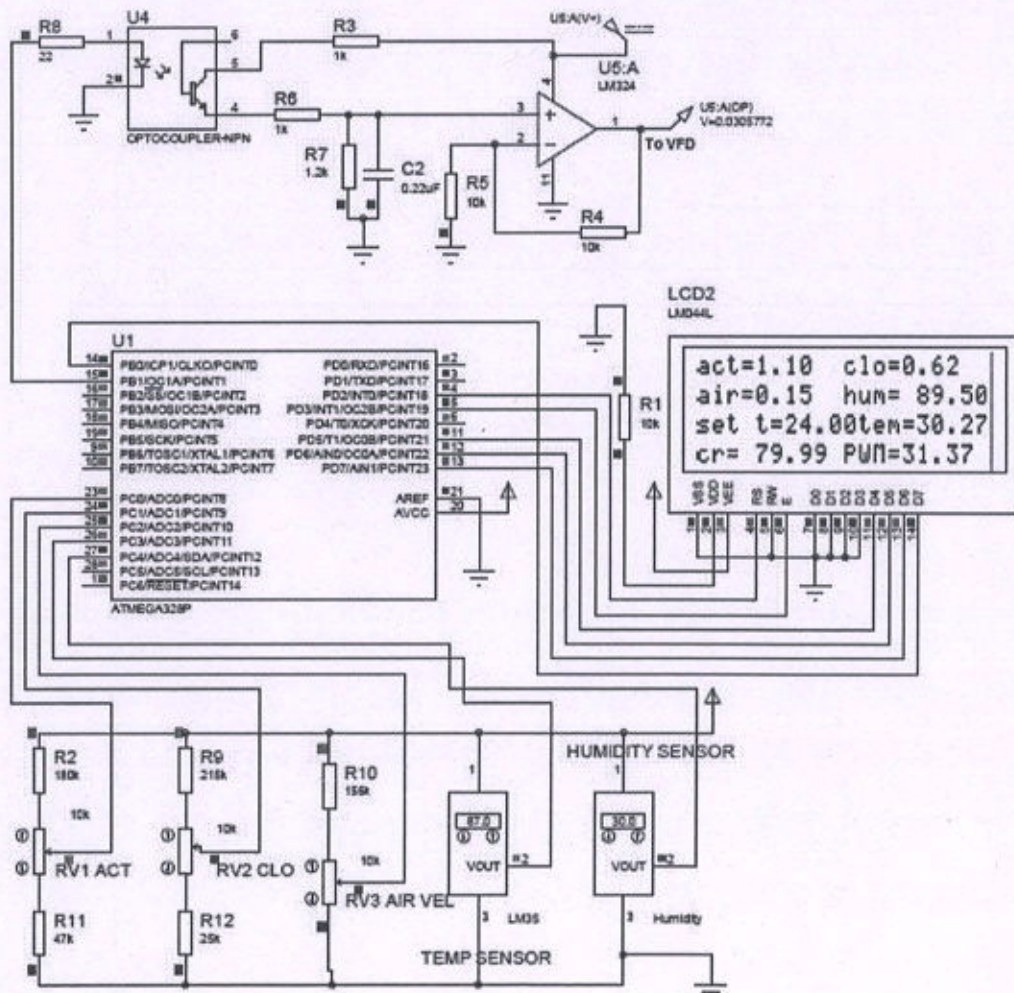


Fig. 15. Schematic design of GAFLC.



to this count. The PWM signal is then converted to proportional DC voltage in the range of 0–10 V with op-amp configured in noninverting amplifier with a gain of 2. The output of op-amp amplifier is fed as a control voltage to VFD. This generates three-phase output of variable frequency in the range of 0–50 Hz related to the input control voltage. The three-phase output drives the induction motor, which in turn drives the compressor. This causes the evaporator temperature to change. This action helps maintaining the control variables to desired levels.

4.2. Pseudo-code

The portion of code designed for FISs in Arduino integrated development environment is shown as follows:

```

1. // calculates the required temperature to
   maintain thermal comfort
2. if ((act >= 1.00 && act <= 1.10)
   && (clo >= 0.50 && clo <= 0.6)&&
   (air >= 0 && air <= 0.15) &&
   (humi >= 20 && humi <= 50))// case-1
3. { d[1] = (1.10 - act)/0.10;
4.   d[2] = (act - 1.00)/0.10;
5.   d[3] = (0.60 - clo)/0.10;
6.   d[4] = (clo - 0.50)/0.10;
7.   d[5] = (0.15 - air)/0.15;
8.   d[6] = (air)/0.15;
9.   d[7] = (50 - humi)/30;
10.  d[8] = (humi - 20)/30;
11. /* Fuzzy Inference */ /* Measurement of
   adaptability of each rule in premise
   part */
12.   for (i = 2; i <= 8; i++)
13.   {
14.     if (d[1] < d[i])
15.     {
16.       d[1] = d[i];
17.     }
18.   }
19. x = (d[1] * Peak value of MF2);
20.   k[1] = (1.10 - act)/0.10;
21.   k[2] = (0.60 - clo)/0.10;
22.   k[3] = (0.15 - air)/0.15;
23.   k[4] = (air)/0.15;
24.   k[5] = (50 - humi)/30;
25.   k[6] = (humi - 20)/30;
26.   for (i = 2; i <= 6; i++)
27.   {
28.     if (k[1] < k[i])
29.     {
30.       k[1] = k[i];
31.     }
32.   }
33. y = (k[1] * Peak value of MF3);
34.   r[1] = (act - 1.00)/0.10;
35.   r[2] = (clo - 0.50)/0.10;

```

```

36.   r[3] = (0.15 - air)/0.15;
37.   r[4] = (50 - humi)/30;
38.   r[5] = (humi - 20)/30;
39. for (i = 2; i <= 5; i++)
40. {
41.   if (r[1] < r[i])
42.   {
43.     r[1] = r[i];
44.   }
45. }
46. z = (r[1] * Peak value of MF1);
47. m = (d[1] + k[1] + r[1]);
48. p = (x + y + z)/m; // defuzzification by
   weighted average method
49. Serial.print(t);
50. Serial.print("t"); }

```

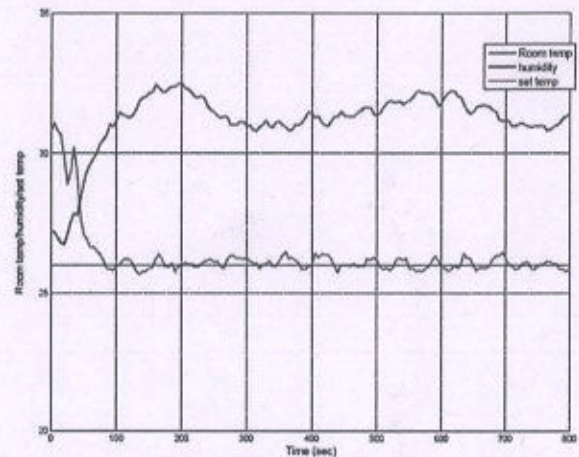


Fig. 16. Desired comfort temperature and achieved room temperature (for activity velocity = 1.05 met, cloth = 0.55 clo, and air velocity = 0.05 m/s).

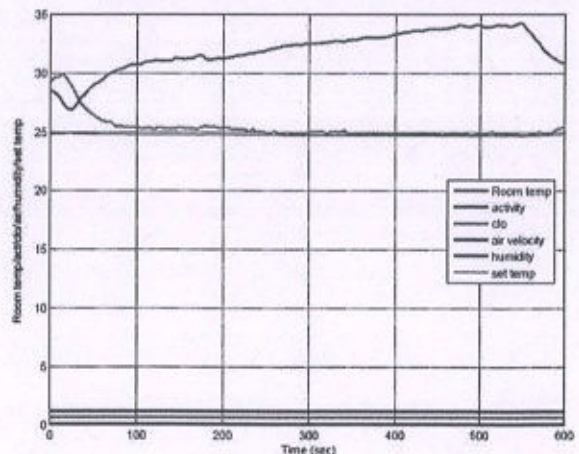


Fig. 17. Desired comfort temperature and achieved room temperature (for activity velocity = 1.2 met, cloth = 0.65 clo, air velocity = 0.05 m/s).



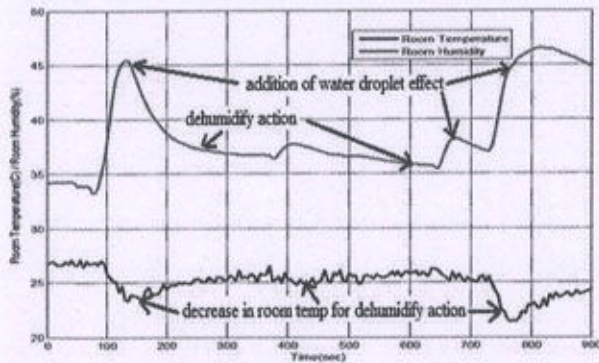


Fig. 18. Simultaneous control of room temperature and relative humidity (with disturbances).

The data collected for two control strategies are plotted as shown in Figs. 16–18. In the first strategy all the parameters are sensed, accordingly the comfort temperature to be set is maintained as shown in Figs. 16 and 17. In the second strategy, all the parameters are sensed and accordingly the temperature and relative humidity are controlled simultaneously as shown in Fig. 18.

5. Results and Discussion

From Fig. 11 it is seen that the generated temperature is in the range of 24.4–26.55°C, which is well above the set general temperature value of 24°C. This in turn saves energy consumption to a greater extent. From Fig. 12 it is seen that for different combinations of all variables, the PMV value lies in between -0.5 and $+0.5$ as a neutral condition and as shown in Fig. 13, the PPD value is below 10%. This indicated that the designed control logic achieves better thermal comfort at workplace at optimal energy usage. From Figs. 16 and 17, the parameters *act*, *clo*, and *air velocity* are kept constant and the room temperature and humidity are monitored. For these circumstances FLC has generated the room temperature values (26°C and 25°C) shown by blue lines and they are maintained successfully by the FLC as shown by the pink lines. Figure 18 shows the experimental result of the simultaneous control of temperature and relative humidity. During experimentation the humidity has been increased at certain instances by adding water droplets. In this situation the FLC lowers the evaporator coil temperature to condense the water droplets thereby accelerating the dehumidifying action and finally keeps the relative humidity with

in acceptable limits. For example, it is seen that by applying disturbances inside the room, the relative humidity has increased suddenly to a value of 45.46%, then immediately the evaporator coil temperature and room temperature (23.32°C) drop down shown by the blue and pink lines, respectively, causing dehumidifying action prominently and hence reducing the relative humidity. During disturbances, the PMV (0.59) and PPD (27%) indices go beyond the acceptable limits, but after condensation of water droplet they reside within the acceptable limits. Thus FLC has also performed well in maintaining the comfort level based on simultaneous control over temperature and relative humidity.³¹

6. Conclusion

The paper focused on the design of genetically optimized fuzzy logic controller to achieve the thermal comfort inside the room based on Fanger's PMV index by split air-conditioner. It is successfully designed and embedded in commercially available 8-bit ATmega-328 microcontroller with ease and cost effective approach. It offered the effective solution to the healthcare of residents and employees from heat stress providing comfortable ambience as the PMV index lies in the range -0.23 to $+0.36$ with untuned FIS and -0.32 to $+0.14$ with GA tuned FIS. From simulated data, the calculated standard deviation of PMV values for GA-tuned FIS is 0.165 and for untuned FIS it is 0.172. It shows GA-tuned FIS outperformed the untuned FIS. Also from simulated results it is observed that the personal parameters such as clothing and activity level have the highest impact.

Since it is a general practice to keep the air-conditioner to operate in such a way to maintain the room temperature in the range of 20–24°C. In this context the study reveals that for most of the possible conditions the range of 24.4–26.55°C will be the comfort one. This indicates the scope for reducing energy consumption.

References

1. B. Berglund *et al.*, Effects of indoor air pollution on human health, *Indoor Air* 2 (1992) 2–25.
2. ASHRAE, Inc., ANSI/ASHRAE Standard 55-2004: Thermal Environmental Conditions for Human Occupancy, ASHRAE Standard Project Committee 55, ASHRAE, Inc., Atlanta, Ga.



3. P. O. Fanger, The influence of certain special factors on the application of the comfort equation. *Thermal Comfort: Analysis and Applications in Environmental Engineering* (Danish Technical Press, Copenhagen, 1970), p. 244.
4. E. A. Stephen, M. Shnathi, P. Rajalakshmy and M. M. Parthido, Application of fuzzy logic in control of thermal comfort, *Int. J. Comput. Appl. Math.* **5** (2010) 289–300.
5. M. H. Hasan, F. Alsaleem and M. Rafeaie, Sensitivity analysis for the PMV thermal comfort model and the use of wearable devices to enhance its accuracy, *4th Int. High Performance Buildings Conf.* (2016).
6. G. Pragnya and B. Papachary, Automatic control system for thermal comfort robot, *Int. J. Mod. Eng. Res.* **1** (2016) 50–52.
7. A. I. Dounis, M. J. Santamouris, C. C. Lefas and A. Argiriou, Design of a fuzzy set environment comfort system, *Energy Build.* **22** (1995) 81–87.
8. M. Hamidi, G. Lachiver and F. Michaud, A new predictive thermal sensation index of human response, *Energy Build.* **29** (2010) 167–178.
9. M. M. Gouda, S. Danaher and C. P. Underwood, Thermal comfort based fuzzy logic controller, *Build. Serv. Eng. Res. Technol.* **22** (2001) 237–253.
10. K. L. Ku, J. S. Liaw, M. Y. Tsai and T. S. Liu, Automatic control system for thermal comfort based on predicted mean vote and energy saving, *IEEE Trans. Autom. Sci. Eng.* **12** (2015) 378–383.
11. N. S. Nise, *Control Systems Engineering*, Sixth Edn. (Wiley, 1992).
12. S. Basu, Realization of fuzzy logic temperature controller, *Int. J. Emerg. Technol. Adv. Eng.* **2** (2012) 151–155.
13. R. R. Yager and D. P. Filev, *Essentials of Fuzzy Modeling and Control*, 1st edn. (John Wiley and sons, New York, 1994), p. 408.
14. F. Eshragh and E. H. Mamdani, A general approach to linguistic approximation, *Int. J. Man-Mach. Stud.* **11** (1979) 501–519.
15. O. A. Bajeh and O. J. Emuoyibofarhe, A fuzzy logic temperature controller for preterm neonate incubator, *Proc. First Int. Conf. Mobile Computing Wireless Communication, E-Health, M-Health and Telemedicine* (2008), pp. 158–172.
16. S. N. Shivnandam and S. N. Deepa, *Principles of Soft Computing*, 2nd edn. (Wiley publication, India, 2007), p. 762.
17. A. M. Ibrahim, *Introduction to Applied Fuzzy Electronics* (Prentice Hall, New Jersey, 1997), p. 192.
18. C. B. Patil, S. R. Potdar and R. R. Mudholkar, Thermal modeling of Air-conditioned prototype room using Matlab.simulink, *Int. J. Eng. Sci. Technol.* **9** (2017) 901–907.
19. J. Lin and R. J. Lian, DSP-based self-organizing fuzzy controller for active suspension systems, *Int. J. Veh. Mech. Mobil.* **46** (2008) 1123–1139.
20. P. Lin and C. Ellsworth, Design and implementation of a PC-based universal fuzzy logic controller system, *Proc. IEEE Conf. Industrial Automation and Control Engineering Technology Applications* (1995), pp. 399–408.
21. H. A. Yousef, Design and implementation of a fuzzy logic computer-controlled sun tracking system, *Proc. IEEE Int. Symp. Industrial Electronics*, Vol. 3 (1999), pp. 1030–1034.
22. Y. Tipsuwan and M. Y. Chow, Fuzzy logic micro-controller implementation for DC motor speed control, *Proc. 25th Annu. Conf. IEEE Industrial Electronics Society*, Vol. 3 (1999), pp. 1271–1276.
23. A. Costa, A. De Gloria, F. Giudici and M. Olivieri, Fuzzy Logic microcontroller, *IEEE Micro* **17** (1997) 66–74.
24. P. Guillemin, Fuzzy logic applied to motor control, *IEEE Trans. Ind. Appl.* **32** (1996) 51–56.
25. J. Binfet and B. M. Wilamowski, Microprocessor implementation of fuzzy systems and neural networks, *Proc. Int. Joint Conf. Neural Networks*, Vol. 1 (2002), pp. 234–239.
26. C. J. Jimenez, S. S. Solano and S. A. Barriga, Hardware implementation of a general purpose fuzzy controller, *Proc. Sixth Int. Fuzzy Systems Association World Congr.*, Vol. 2 (1995), pp. 185–188.
27. M. D. Hanamane, R. R. Mudholkar, B. T. Jadhav and S. R. Sawant, Implementation of fuzzy temperature control using microprocessor, *J. Sci. Ind. Res.* **65** (2006) 142–147.
28. F. Farkas and S. Halasz, Embedded fuzzy controller for industrial applications, *Acta Polytech. Hung.* **3** (2006) 41–63.
29. S. Khan, F. S. Abdulazeez, A. W. Lawal and A. H. M. Z. Alam, Design and implementation of an optimal fuzzy logic controller using genetic algorithm, *J. Comput. Sci.* **4** (2008) 799–806.
30. S. Isa, J. Lazi, Z. Ibrahim and A. Hasim, dSPACE DSP based implementation of simplified fuzzy logic speed controller for vector controlled PMSM drives, *Proc. IEEE Int. Conf. Power and Energy* (2012), pp. 898–903.
31. C. B. Patil and R. R. Mudholkar, Design and implementation of fuzzy logic controller for split air-conditioner system to simultaneous control of temperature and humidity, *J. Emerg. Technol. Innov. Res.* **6** (2019) 87–93.





Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
English Part - V

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com



Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I English Part - V January - March - 2019

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)



❧ CONTENTS OF ENGLISH PART - V ❧

Sl. No.	Title & Author	Page No.
25	Role of Commercial Bank in the Economic Development in India Dr. Manohar Dattu Pujari	115-119
26	What are Technology's Effects on Culture Rutuja Nilesh Kasar	120-124
27	What are Technology's Effects on Culture Mr. S. M. Chavan Dr. N. V. Nalawade	125-128
28	Multicultural Encounters in Monica Ali's 'Brick Lane' Ms. S. S. Sarmagdum	129-133
29	Demonetization - Advantages and Disadvantages Mr. Sawant Sambhaji Shivaji	134-137
30	Search for Identity in Mohsin Hamid's the Reluctant Fundamentalist Dr. Sanjay M. Sathe	138-142
31	Divisibility, Compressed Representation, Sum of Digits in any Base and its Implementation in Improved Python 3 Mr. Jadhav Mehul Arun Ms. Patil Rajashri Yashawant Mr. Swami Akshay Ramesh	143-147
32	Foreign Direct Investment — Advantages and Disadvantages Tushar Shamrao Kadm	148-150
33	Higher Education: A Platform for Multicultural Exchange Mr. Vinodkumar Ashok Pradhan	151-155
34	A Case Study of Women Entrepreneurship in Chandgad Taluka Mr. Vasant K. More	156-165
35	Globalization and Politics Dr. Vikas Singh	166-171
36	Fish Diversity in Vedganga River: A Study Geeta R. Katkar Vishalsinha S. Kamble	172-176



27. Divisibility, Compressed Representation, Sum of Digits in any Base and its Implementation in Improved Python 3

Mr. Jadhav Mehul Arun

Assistant Professor, Department of Computer Science(Entire), The New College, Kolhapur, Maharashtra, Shivaji University, Kolhapur.

Ms. Patil Rajashri Yashawant

Assistant Professor, Department of Computer Science, Vivekanand College, Kolhapur, Maharashtra, Shivaji University, Kolhapur.

Mr. Swami Akshay Ramesh

Assistant Professor, Head Department of Computer Science, Dattajirao Kadam Arts, Science And Commerce College, Ichalkaranji, Maharashtra, Shivaji University, Kolhapur.

Chougale Shubham Pandurang

Research Student, Department of Computer Science, Vivekanand College, Kolhapur, Maharashtra, Shivaji University, Kolhapur.

Abstract

The aim of this research paper is to study the divisibility, reduced representation in any base number system for integers, try to generalise divisibility rules for $\beta, \beta^n, \beta + 1, \beta - 1$, their factors, sum of digits in single digit form and to find implementation in Python3.

Keywords: Division Algorithm, Divides, int, class, constructor, digits

1. Introduction

Number system of Integers in base (β):

Let $\beta > 1$ is in as an integer with $D_\beta = \{0, 1, 2, \dots, \beta - 1\}$ is digit set. If x is an integer number is base β then it is represented as, $(x)_\beta = a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + \dots + a_{n-1}\beta^1 + a_n$ where $a_0 \neq 0$ & $a_1, a_2, \dots, a_n \in D_\beta, n \in \mathbb{N}$

Division Algorithms: For $a, b, q, r \in \mathbb{Z}^0, b = aq + r, a < b, q \in \mathbb{Z} \text{ \& } 0 \leq r < |a|$

Divides: If $r = 0$ then $a|b$

Divides in base β ($\beta > 1$): If $(a)_\beta |(b)_\beta$ then we say that $a|_\beta b$ and $a|_\beta b \Rightarrow a|_{10} b$

If $a|b$ then $a|_\beta b$ where $\beta \in \mathbb{Z}^+, \beta \geq 2$



2. Divisibility in base β

Theorem 1: By base β itself

Consider $(x)_\beta = a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_{n-1}\beta^1 + a_n, a_0 \neq 0 \& a_1, a_2, \dots, a_n \in \mathbb{D}_\beta, \beta > 1$, if $\beta |_\beta x$ then $\beta |_\beta a_n$ i.e. $a_n = 0$.

Corollary 1.1: Factor of β

Consider $\alpha |_\beta$, if $\alpha |_\beta x$ then $\alpha | a_n$

Corollary 1.2: Powers of Factor of β

Consider $\alpha |_\beta$ i.e. $\alpha^n |_\beta$, if $\alpha^n |_\beta x$ then α divides numbers composed of last n digits.

Proof 1

We know that every number divides all its power. Hence $\beta |_\beta a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_{n-1}\beta^1$ hence if $\beta |_\beta x$ then $\beta |_\beta a_n$ i.e. $a_n = 0$

Proof 1.1

By transitivity, if $\alpha |_\beta \beta, \beta |_\beta x$ then $\alpha |_\beta x$ hence $\alpha |_\beta a_n$

Proof 1.2

Consider $\alpha^m |_\beta \beta^m, m < n$. We know that $\alpha^m |_\beta a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_k\beta^m$ hence if $\alpha^m |_\beta x$ then $\alpha^m |_\beta a_{k+1}\beta^{m-1} + a_{k+2}\beta^{m-2} + \dots + a_n$ i.e. number composed of last m digits.

Theorem 2: By $\beta - 1$

If $(x)_\beta = a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_{n-1}\beta^1 + a_n, a_0 \neq 0 \& a_1, a_2, \dots, a_n \in \mathbb{D}_\beta, \beta > 1$

1

then if $(\beta - 1) |_\beta x$ then $(\beta - 1) |_\beta \sum_{i=0}^n a_i$.

Corollary 2.1: Factor of $(\beta - 1)$

Consider $\alpha |_\beta (\beta - 1)$, if $\alpha |_\beta x$ then $(\beta - 1) |_\beta \sum_{i=0}^n a_i$

Proof 2

We know that $(\beta - 1) |_\beta (\beta^n - 1), \forall n \in \mathbb{N}$

Consider $(x)_\beta = a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_{n-1}\beta^1 + a_n, a_0 \neq 0 \& a_1, a_2, \dots, a_n \in \mathbb{D}_\beta, \beta > 1$ Let $(x)_\beta = a_0(\beta^n - 1) + a_1(\beta^{n-1} - 1) + a_2(\beta^{n-2} - 1) + \dots + a_{n-1}(\beta^1 - 1) + \sum_{i=0}^n a_i$ Since, $(\beta - 1) |_\beta a_0(\beta^n - 1) + a_1(\beta^{n-1} - 1) + a_2(\beta^{n-2} - 1) + \dots + a_{n-1}(\beta^1 - 1)$

Therefore, if $(\beta - 1) |_\beta x$ then $(\beta - 1) |_\beta \sum_{i=0}^n a_i$.



Proof 2.1

By transitivity, if $\alpha |_{\beta} (\beta - 1)$, $(\beta - 1) |_{\beta} x$ then $\alpha |_{\beta} x$ hence as $(\beta - 1) |_{\beta} \sum_{i=0}^n a_i$, $\alpha |_{\beta} \sum_{i=0}^n a_i$

Theorem 3: By $\beta + 1$

If $(x)_{\beta} = a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_{n-1}\beta^1 + a_n$, $a_0 \neq 0$ & $a_1, a_2, \dots, a_n \in D_{\beta}$, $\beta >$

1

then if $(\beta + 1) |_{\beta} x$ then $(\beta + 1) |_{\beta} \sum_{i=0}^n (-1)^i a_i$.

Corollary 3.1: Factor of $(\beta + 1)$

Consider $\alpha |_{\beta} (\beta + 1)$, if $\alpha |_{\beta} x$ then $(\beta + 1) |_{\beta} \sum_{i=0}^n (-1)^i a_i$

Proof 3

We know that, $(\beta + 1) |_{\beta} (\beta^n - 1)$, if $n = 2k$, k is positive integer, $(\beta + 1) |_{\beta} (\beta^n + 1)$, if $n = 2k - 1$, k is positive integer. Consider $(x)_{\beta} = a_0\beta^n + a_1\beta^{n-1} + a_2\beta^{n-2} + \dots + a_{n-1}\beta^1 + a_n$, $a_0 \neq 0$ & $a_1, a_2, \dots, a_n \in D_{\beta}$, $\beta > 1$. Let $(x)_{\beta} = a_n + a_{n-1}(\beta + 1) - a_{n-1} + a_{n-2}(\beta^2 - 1) + a_{n-2} + a_{n-3}(\beta^3 + 1) - a_{n-3} + \dots$. $(x)_{\beta} = (a_{n-1}(\beta + 1) + a_{n-2}(\beta^2 - 1) + a_{n-3}(\beta^3 + 1) + \dots) + (a_n - a_{n-1} + a_{n-2} - a_{n-3} + \dots)$. Since, $(\beta + 1) |_{\beta} a_{n-1}(\beta + 1) + a_{n-2}(\beta^2 - 1) + a_{n-3}(\beta^3 + 1) + \dots$. Therefore, if $(\beta + 1) |_{\beta} x$ then $(\beta + 1) |_{\beta} \sum_{i=0}^n (-1)^i a_i$.

Proof 3.1

By transitivity, if $\alpha |_{\beta} (\beta + 1)$, $(\beta + 1) |_{\beta} x$ then $\alpha |_{\beta} x$ hence as $(\beta + 1) |_{\beta} \sum_{i=0}^n (-1)^i a_i$, $\alpha |_{\beta} \sum_{i=0}^n (-1)^i a_i$

Theorem 4: Digit Sum In Any Base

If $(x)_{\beta}$ is integer representation in base β then single digit sum in base β is nothing but remainder after dividing by $\beta - 1$ if it is 0 then digit sum is $\beta - 1$.

Theorem 5: Compressed Representation

If $(x)_{\beta}$ is integer representation in base β we can represent it in base β^n by representing blocks of n digits from right to left with equivalent decimal representation in base β^n .

3. Python3 class int

Python 3 has improved class named *int* which supports number of base 2 to 36, constructor `__int__(x, base=10)` which needs two arguments x is string or number and default base is 10 and has valid input set $\{0, 2, \dots, 36\}$ 0 means default base 10. If base is given x must be string containing digits from digit set of base *base*. As there are 10 digits in decimal and 26



alphabets it supports maximum 36 base hence Digit set for base 36 $D_{36} = \{0,1, \dots, 9, a, b, \dots, z\}$, similarly we can find digit set for other base.

Examples using Python3

For Divisibility By base β itself

$(3210)_6 = (726)_{10}$, $6|726$ hence $6|_6 3210$ and we observe 0 as last digit in 3210

For Divisibility By Factor of β

2 and 3 are factors of 6.

$(3212)_6 = (728)_{10}$, $2|728$ hence $2|_6 3212$ and we observe 2 as last digit in 3212

$(3214)_6 = (730)_{10}$, $2|729$ hence $2|_6 3214$ and we observe 4 as last digit in 3214

$(3213)_6 = (729)_{10}$, $3|729$ hence $3|_6 3213$ and we observe 3 as last digit in 3213

For Divisibility By Powers of Factor of β

2 and 3 are factors of 6.

$(3212)_6 = (728)_{10}$, $2^2|728$ hence $2^2|_6 3212$ and we observe 12 as last 2 digits in 3212

$(3254)_6 = (754)_{10}$, $3^2|754$ hence $3^2|_6 3254$ and we observe 54 as last 2 digits in 3254

For Divisibility By $\beta - 1$

$(3201)_7 = (1128)_{10}$, $6|1128$ hence $6|_7 3201$ and digit sum is 6.

For Divisibility By Factor of $(\beta - 1)$

2 and 3 are factors of 6.

$(3001)_7 = (1030)_{10}$, $2|1030$ hence $2|_7 3001$ and digit sum is 4.

$(3033)_7 = (1053)_{10}$, $3|1053$ hence $3|_7 3033$ and digit sum is 9.

For Divisibility By $\beta + 1$

$(3201)_7 = (1128)_{10}$, $8|1128$ hence $8|_7 3201$ and alternate difference of digit sum is 0.

For Divisibility By Factor of $(\beta + 1)$

2 and 4 are factors of 8.

$(3001)_7 = (1030)_{10}$, $2|1030$ hence $2|_7 3001$ and alternate difference of digit sum is 2.

$(3021)_7 = (1044)_{10}$, $4|1044$ hence $4|_7 3001$ and alternate difference of digit sum is

For Digit Sum In Any Base

$(11111)_9 = (7381)_{10}$, $7381 \% 8 = 5$ digit sum is 5.

Theorem 5: Compressed Representation

$$(212101)_3 = (771)_9 = (NA)_{27}$$



Base	Factor of Base	Base -1	Factor of Base -1	Base+1	Factor of Base +1
int('3210',6)	int('3213',6)	int('3201',7)	int('3001',7)	int('3201',7)	int('3021',7)
726	729	1128	1030	1128	1044
int('3210',6)%6	int('3213',6)%3	int('3201',7)%6	int('3001',7)%2	int('3201',7)%8	int('3021',7)%4
0	0	0	0	0	0

Table1 : Python Code For Divisibility

Sum Of Digits	Compressed Form
>>> int('11111',9)	>>> int('212101',3) >>> 631
7381	>>> int('771',9) >>> 631
>>> int('11111',9)%8	>>> int('NA',27) >>> 631
5	

Table2 : Python Code For Sum Of Digits and Compressed Version

4. Conclusion

It is clear that we can generalise divisibility rules in any base and can represent it any base. Even we can generalise sum of digits in single digit in any base as well as we can represent numbers in higher power of base.

5. References

- [1] Richmond, Bettina; Richmond, Thomas (2009). A Discrete Transition to Advanced Mathematics. Pure and Applied Undergraduate Texts. 3. American Mathematical Soc. ISBN 978-0-8218-4789-3
- [2] Apostol, Tom M. (1976). Introduction to analytic number theory. Undergraduate Texts in Mathematics. 1. Springer-Verlag. ISBN 978-0-387-90163-3.
- [3] Kisačanin, Branislav (1998). Mathematical problems and proofs: combinatorics, number theory, and geometry. Plenum Press. ISBN 978-0-306-45967-2.



No. 1

7.13

ISSN 2277-8063

September 2019

Vol. VIII / Issue - III / 2019



International Interdisciplinary Research Journal
[Humanities, Social Sciences, Languages,
Commerce & Management]

Chief Editor

Prof. Dr. Ravindra P. Bhanage
Head, Dept. of Political Science,
Shivaji University,
Kolhapur.

Editor

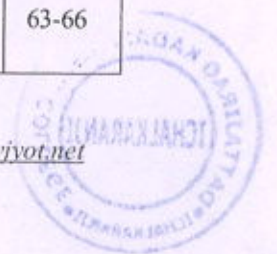
Dr. Pyarelal Suryawanshi
Prof. Rajabhau Deshmukh
Mahavidyala, Nandgaon, (kh)
Dist.-Amravati.

- Published by-
HOUSA Publication, Kolhapur.



CONTENTS

S.N.	Subject	Title	Author	P. No.
1	हिंदी	मराठी और हिंदी साहित्य में दलित चिन्तन	प्रा.शरद बा. शिरोडकर	1-5
2	मराठी	उदय प्रकाश यांच्या कथांतील जीवनाभूत	गुरुदत्त म्हाडगुत	6-8
3	मराठी	कोकणातील संस्कृती व नाथ संप्रदाय	भक्ती गोविंद महाजन	9-13
4	राज्यशास्त्र	भारतीय संविधान आणि बुद्ध धम्म	प्रा. राजरतन शा. जाधव	14-18
5	राज्यशास्त्र	भारतीय संविधानाबाबत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा दृष्टीकोन	प्रा. आनंदा कांबळे	19-23
6	राज्यशास्त्र	कोल्हापूर जिल्ह्यातील दलितांची स्थिती : एक अभ्यास	प्रा. नंदकुमार कोल्हापूरे	24-30
7	राज्यशास्त्र	७३ वी घटना दुरुस्तीची ग्रामसभेची ग्रामविकासातील भूमिका	दौलत भुजंगा साळवे	31-33
8	समाजशास्त्र	रत्नागिरी जिल्ह्यातील मत्सविक्री करणाऱ्या स्त्रियांचा सामाजिक आणि आर्थिक अभ्यास	अर्चना बी. शिवदाय	34-36
9	इतिहास	रत्नागिरी जिल्ह्यातील गणेश मंदिराचा एक दृष्टीक्षेप	प्रा. अजय श्रीपती पाटील	37-42
10	ग्रंथालय व माहितीशास्त्र	सार्वजनिक ग्रंथालयातील मराठी दोलामुद्रीतांच्या सद्यस्थितीचा शोध	मधुकर दिनकर पाटील डॉ. नमिता खोत	43-45
11	जनसंवाद व विद्याविभाग	कोल्हापूराला मराठा क्रांती मूक मोर्चाला वर्तमानपत्रांनी दिलेले स्थान : दैनिक पुढारी व दैनिक सकाळ एक तौलनिक अभ्यास	साधना रामचंद्र काळे	46-49
12	मराठी	विंदांच्या कवितांचे स्त्रीवादी आकलन	प्रा. गुंडूराव यल्लापा कांबळे	50-52
13	राज्यशास्त्र	यशवंतराव चव्हाण : केंद्र शासनातील एक संसदपटू	डॉ. अरुण आर. गाडे प्रा. विशाल लहू कांबळे	53-59
14	मराठी	परिवर्तनवादी प्रबोधनकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर	प्रा. प्रकाश आप्पासो हुलेनवर	60-62
15	English	Dalit Literature: A Social Perspective	Kalebag Vijay Sopan	63-66



Aims and Objectives of the Journal :

The aims and objectives of the journal is to provide a platform for the publication of original unpublished Research Papers, Summary of a Research Project, proceedings of academic conferences and Book review of Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management interdisciplinary research work.

Language :- English and Indian languages

Frequency :- Quarterly (March, June, September & December) Please send your research papers at least one month before date of publishing the issue.

Format & Guidelines for the Research paper:

*The Research must purely be original and the paper typed in 1.5 space on one side of A-4 size paper in MS-Word 2003 / 2007 font Times New Roman for English font size 12, Krutidev or Shree Lipee 6.0 version for Hindi and Marathi font size 16 and should have a sufficient margin

*This must include Abstract, Introduction, Clarification of Research Problem, Conclusion & References

*Paper should be sent in two hard copies along with CD or by E-mail: editornavjyot@gmail.com

*Authors are solely responsible for the factual accuracy of their contribution.

*Proper references must be inserted inside the article like 1, 2, 3.... and relevant references must be given at the end of the article Minimum five references are essential.

*References must be listed alphabetically or sequentially in the following order - Surname, Name, Year in Bracket, Name of the Book/Journal, Details of Publisher, Place and Page number at the end of the research paper. For ex. Dilli K. T. (2009) Library and Information Science in Digital Era, Atlantic Publishers, New Delhi, P.133.

*Authors are requested to submit diagrams, maps and pictures of their writings in a separate file with jpg/gif extension.

*Research Article should be written in minimum 1500 and maximum 3000 words

Peer Review:

*Every research paper will be reviewed by two members of peer review committee.

Publication Criteria:

*Article can be modified and references can be added by the subject expert (if needed).

*The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clarity of expression, scientifically. logical, analytical and perfect research methodology. Terms and Conditions:

*The Author must be member of this journal at the time of submission of research paper.

*Authors are requested to read the following Terms and Conditions' very carefully. If authors submit anything for publication, it will be taken granted that they have read the Terms and Conditions' and agreed to the same. *While submitting any piece of writing for consideration of publication, the authors understand that the same has not been sent or is not being considered for publication elsewhere.

*By virtue of submission and accepting the 'Terms & Conditions' the authors give NAVJYOT International Interdisciplinary Research Journal [Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management] the exclusive copyright to publish and reproduce the research paper, diagrams, maps and images online and in hard paper formats and on other digital formats like CD/ DVD etc. in unlimited copies at any time.

*The authors are responsible for getting the permission from the copyright holders for the reproduction of articles, long quotations, diagrams, maps and images.

*The authors should note that NAVJYOT is a non-profit, non-commercial platform. The authors should understand that they will not be paid for their writings/works. They should consider this as a free service for the open access to knowledge community.

*Primarily, the submitted research papers will be considered by the editors for the confirmation of standards and the scope of the journal. If any submitted research paper fails to fulfill primary standard, the same will be rejected.

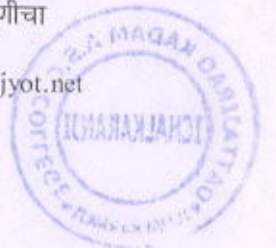


यशवंतराव चव्हाण : केंद्र शासनातील एक संसदपटू

प्राचार्य डॉ. अरुण आर. गाडे, श्रीमती एम. एम. मेहता आर्ट्स कॉमर्स कॉलेज, पाचगणी, सातारा.
प्रा. विशाल लहू कांबळे, डी. के. एस. सी. कॉलेज, इचलकरंजी, कोल्हापूर.

प्रस्तावना -

“भारतीय स्वातंत्र्याच्या चळवळीमध्ये सक्रिय सहभागी झालेले तरुण नेतृत्व म्हणजे यशवंतराव चव्हाण होय.”^१ त्यांचे नेतृत्व संघर्षमय चळवळीने भरलेले होते. त्यांचा जन्म 12 मार्च 1913 मध्ये सातारा जिल्ह्यातील देवराष्ट्रे या गावी झाला. त्यांच्या जीवनातील आणि नंतर देखिल त्यांनी चळवळीपासून प्रेरणा घेतलेली दिसते. 1930 मधील सातारातील असहकार चळवळीमध्ये सक्रिय सहभाग घेतलेला होता. त्यांची भेट स्वामी रामानंद भारती धुळाप्या बाबुराव नवले, आप्पासाहेब सिहासाने, व्ही.एस. पागे आणि गोविंद कृपाराम वाणी यांच्याशी झाली व त्यांचे ते शेवट पर्यंत मित्र बनले. “1932 मध्ये 18 महिन्यांचा तुरुंगवास देखील त्यांना भोगावा लागला.”^२ अशा प्रकारे चळवळीमधून क्रियाशील राहण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला. 1938 मध्ये त्यांनी बॉम्बे विद्यापीठातून इतिहास व राज्यशास्त्र या विषयातून बी.ए. ची पदवी घेतली. याकाळात अनेक कार्यकर्ते व नेहऱू सरदार पटेल, केशवराव जेधे यांसारख्या नेत्यांचा जवळून संपर्क आला. कारण सामाजिक कार्यामध्ये त्यांनी भाग घेतलेला होता. 1940 मध्ये सातारा जिल्ह्याचे कॉॅं ग्रेस अध्यक्ष म्हणून त्यांची नियुक्ती झाली. 1941 साली एल.एल.बी. परीक्षा पास झाले. 1942 मध्ये फलटनमधील वेणुताई शी त्यांचा विवाह झाला. याच कालखंडात म्हणजे 1942 मध्ये मुंबई शेषणाच्या ऑल इंडिया कॉॅं ग्रेस कमिटी पदी नियुक्ती झाली. “या काळात स्वातंत्र्य चळवळीमध्ये सहभाग घेतल्याबद्दल यशवंतराव चव्हाणांना अटक करण्यात आले. पुढे 1944 मध्ये जेलमधून सुटका करण्यात आली.”^३ अशा प्रकारची राजकीय पार्श्वभूमी यशवंतरावांनी मिळवलेली होती. यशवंतराव चव्हाणांना बॉम्बे लेजीस्लेटीव्ह असेंब्लीमध्ये सदस्य म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. पाच वर्षे महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री म्हणून त्यांनी पदभार सांभाळलेला होता. त्यानंतर 21 नोव्हेंबर, 1962 साली भारताच्या संरक्षणमंत्री पदासाठी पं.नेहरुंना यशवंतरावांना बोलविले व संरक्षणमंत्री म्हणून त्यांचे योगदान महत्वपूर्ण आहे. त्याचबरोबर गृहमंत्रीअर्थमंत्री व परराष्ट्र व्यवहार मंत्री म्हणून भूमिका तितकीच महत्वाची बजावलेली आहे. यशवंतराव चव्हाण एक प्रबळ कौंसचे नेते होते. सहकाराचे नेतृत्व, सामाजिक कार्यकर्ता व लेखक या स्वरूपाचा एक ज्येष्ठ सकारात्मक दृष्टीने पाहणारा विचारवंत आणि एक उत्कृष्ट प्रशासक होते. कि याची प्रचिती त्यांनी भुषविलेल्या विविध पदांच्या वरील कार्यावरून दिसून येतो. संरक्षण, गृह, अर्थ, परराष्ट्र व्यवहार, उपपंतप्रधान या सर्व पदांमधून त्यांनी बजावलेली भूमिका यातून त्यांच्यातील प्रशासकाचे गुण वैशिष्ट्य समोर येताना दिसतात. यशवंतराव चव्हाणांनी संसदेमध्ये जी कांही भाषणे केली त्यांमधून त्यांच्यातील संसदेत कायदे तज्ञ असणारा वक्ता किंवा संसदपटू साठी लक्ष होणारे गुणवैशिष्ट्ये समोर आलेली पहावयास मिळतात. “त्यांच्यामध्ये प्रश्न, समस्या काळजीपूर्वक हाताळण्याची क्षमता, भारतीय लोकशाहीच्या विकासाच्या दृष्टीने पाहणारी वृत्ती यांचा प्रत्यय त्यांच्या या संसदेतील भाषणातून दिसून येतो”^४ एकंदरीत यशवंतराव चव्हाणांच्या व्यक्तिमत्त्वाचे विविध पैलू हे त्यांनी भुषविलेल्या विविध पदांवरून व त्यांच्या भूमिकेमध्ये पहावयास मिळतो व तेच पुढे उत्कृष्ट संसदपटू म्हणून नावलौकिक होण्यास कारणीभूत ठरलेले आहेत. भारतीय लोकशाही विकेंद्रीकरणाच्या दृष्टीने महाराष्ट्राच्या निर्मितीचा व आधुनिक जडण-घडणीचा



जाणता नेता असा हा एक उत्कृष्ट संसदपटू देखिल होता हे कळण्यास मदत होते. यशवंतराव चव्हाण इयत्ता चौथीच्या वर्गात शिकत असताना त्यांच्या शिक्षकाने विचारलेल्या एका प्रश्नाने उत्तर देताना असे म्हटले की, 'मी यशवंतराव चव्हाण होणार' असे सांगून ते गप्प बसलेले असले तरी त्यांच्या ज्ञानाची, दृष्टेपणाची प्रौढी ही किती उच्च होती हे यातून सिध्द होते. आणि म्हणून स्वतःची ओळख स्वतःच निर्माण करायची असते, की जे आपले नाव इतरांपेक्षा भिन्न स्वरूपाचे होईल. त्याची तुलना अन्य कोणाशी होऊ शकत नाही. हा एक जणु मुलमंत्रच दिलेला असावा लहाणपनापासुनच जिज्ञासू व चिकीत्सक वृत्तीने पाहणारे नेतृत्व हे यशवंतराव चव्हाणच बनले. यांमध्येच संसदपटू होण्याच्या सुरुवातीची बीजे सापडतात. ते त्यांच्या जीवनाच्या जडणघडणीचे सकारात्मक असेच भाग आहेत. त्यामुळे सह्याद्रीच्या कुशीत वाढलेल्या या यशवंतरावांनी भारतीय राजकीय व्यासपिठावर स्वतःची ओळख स्वतःच निर्माण करून विविध भूमिका पार पाडलेल्या आहेत. यशवंतराव चव्हाण एक खंदे प्रशासक, राजकारणी, मुत्सद्दी नेते, लोकशाहीवादी, सामाजिक कार्यकर्ते, लेखक व उत्कृष्ट संसदपटू देखिल होते.

अभ्यासू राजकारणी :-

यशवंतराव चव्हाण जेव्हा 1932 मध्ये तुरुंगात होते. तेव्हा त्यांनी वेगवेगळी पुस्तके वाचण्यास सुरुवात केली. खास करून त्यांना चळवळीला प्रोत्साहन करणाऱ्या क्रांतीकारक पुस्तकांची आवड निर्माण झाली. त्यामधुन वाचन करण्याची एक नवी दृष्टी त्यांना मिळाली. जागतिक क्रांती व कम्युनिस्टांच्या बदल सुरुवातीला त्यांच्या मनामध्ये याच काळात आकर्षण निर्माण झाले. यांशिवाय कॉंग्रेस म्हणवुन घेण्यास ते खुप अभिमान बाळगत होते. इतके आकर्षण त्यांचे वाढलेले होते. मात्र नंतर ज्या काळात हे आकर्षण हळु-हळु कमी झाले. रशियाच्या क्रांतीमधुन ज्याप्रकारचे तत्वज्ञान निर्माण झालेले आहे. त्याप्रकारचे तत्वज्ञान भारतात निर्माण होणे किंवा कृती करणे शक्य होणार नाही' असे यशवंतराव चव्हाणांनी याबद्दलमत देखील व्यक्त केले आहे. त्यांमुळे भारतीय संस्कृतीने भरलेल्या लोकशाही समाजवादाचा पुरस्कार त्यांनी केलेला कितो.⁵ थोडक्यात त्यांच्या मनामध्ये क्रांतीच्या चळवळीचे आकर्षण झाले असले तरी भारतीय समावादाचा आग्रहाने पुरस्कार केलेला दिसुन येतो. असे असले तरी स्वातंत्र्य चळवळीला दिशा देण्यासाठी व मूल्यमापण करण्यासाठी भूमिगत असताना देखील यशवंतराव चव्हाणांना क्रांतीकारक पुस्तके उपयोगी पडत होती. म्हणून राजकारणामधुन नेहमी त्यांची दृष्टी नवी आणि पुरोगामी स्वरूपाची अशीच होती. त्यांमुळे त्यांना अभ्यासू राजकारणी होते असे देखिल म्हणता येईल. याचा उपयोग पुढे संसदेचा खासदार असताना संसदपटू म्हणून विविध पदांचा कार्यभार सांभाळतांना झाला.

राजकीय घडामोडी :-

बॉम्बे राज्याच्या लेझीस्लेटीव्ह असेंब्लीमध्ये असताना विविध भूमिका त्यांनी आपल्या राजकीय करियर मध्ये पार पाडल्या. 1946 साली दक्षिण सातारा मतदार संघातून बॉम्बे लेझीस्लेटीव्ह असेंब्लीमध्ये निवडून गेले. त्याचवेळी त्यांची नियुक्ती मुंबई गृहमंत्रालयाच्या सचिवपदी करण्यात आली. त्यानंतरच्या मोरारजी देसाई सरकारमध्ये त्यांची निवड नागरी पुरवठा सामाजिक कल्याण आणि वनमंत्री म्हणुन मंत्रीपदी करण्यात आली. 1953 मध्ये नागपुर पॅक्टवर प्रादेशीक विकासाच्या दृष्टीने सह्या केल्या. 1957 मध्ये कराड मतदारसंघातून निवडून आले. विधिमंडळामध्ये तेव्हा त्यांची नियुक्ती कॉंग्रेसच्या नेतेपदी केली. नंतरच्या काळात पुढे मुंबई राज्याचे मुख्यमंत्री म्हणुन त्यांनी कार्यभार स्वीकारला. साधारणतः 1957 ते 1960 या काळात ऑल इंडिया कॉंग्रेसमध्ये ते क्रियाशील होते. 1960



साली महाराष्ट्राची निर्मिती झाल्यानंतर मराठी बोलणाऱ्या आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार म्हणून यशवंतराव चव्हाणांना ओळखले जाते. 1 मे 1960 साली महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री हे यशवंतराव चव्हाण बनले. त्यांनी महाराष्ट्रातील प्रादेशिक समतोलपणा लक्षात घेऊन कृषी, औद्योगिकीकरण, इत्यादीमध्ये समान विकास झाला पाहिजे. यादृष्टीने आपले ध्येय बनवले.⁹ लोकशाहीच्या विकासासाठी अनेक संस्थात्मक मंडळ तयार केले. कृषी, शेती व जमिनीविषयक नव-नवीन कायदे निर्माण केले कि जेणेकरून लोकशाही विकेंद्रीकरणाच्या दृष्टीने व विकासाच्या दृष्टीने महत्वाचे ठरले.

केंद्रीय शासनातील भूमिका :-

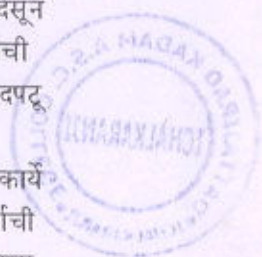
1962 ला भारत-चीन युद्ध सुरु झाले. भारत-चीन सीमा संघर्षामध्ये कृष्ण मेनन यांनी आपल्या संरक्षण मंत्री पदाचा राजीनामा दिला. त्याचवेळी पं.नेहरुंनी यशवंतरावांना केंद्रात बोलवले. मात्र चीनने युद्धात माघार घेतली. आणि पुढे यशवंतराव चव्हाण हे संरक्षणमंत्री बनले. त्यांनी महत्वाच्या भूमिका बजावल्या. भारत-पाकिस्तान युद्धाच्यावेळी तेच संरक्षणमंत्री होते. 1967 च्या सार्वत्रिक निवडणुकीत त्यांची नाशिक मतदारसंघातून बिनविरोध निवड झाली. आणि 14 नोव्हेंबर 1967 ला त्यांची नियुक्ती भारताच्या गृहमंत्री पदी केली. 1970 साली इंदिरा गांधी सरकारमध्ये त्यांची नियुक्ती अर्थमंत्रीपदी आणि 11 ऑक्टोबर, 1974 मध्ये परराष्ट्र व्यवहार मंत्री म्हणून करण्यात आले.

जून 1975 मध्ये इंदिरा गांधींनी राज्यांतर्गत राज्य आणिबाणी जाहीर केली होती. तेंव्हा इंदिराजींच्या नियमांचा तडाखा विरोधी पक्षांना व त्यांच्या नेत्यांना जाणवलेल्या दिसून बौ. तेंव्हा यशवंतरावांना इंदिरा गांधींना पार्टीबा दिलेला होता. त्यानंतर लगेचच 1977 मध्ये सार्वत्रिक निवडणुकीनंतर इंदिरा गांधीची सत्ता गेली. त्यावेळेस यशवंतराव चव्हाणांनी विरोधी पक्षाचा नेता म्हणून भूमिका पार पाडलेली होती. त्याचबरोबर ते एक संसदीय नेता बनले होते.⁶ या स्वभावाची यशवंतराव चव्हाणांचे केंद्रशासन व बॉम्बे राज्यातील भूमिका ह्या महत्वाच्या आहेत.

संरक्षण मंत्री असताना भूमिका :-

यशवंतराव चव्हाण यांची एक संसदपटू म्हणून देखील भूमिका तितकीच महत्वपूर्ण आहे. आपल्या संरक्षण आणि गृहमंत्री पदाच्या मार्फत संसदेमध्ये परिस्थितीनुसार त्यांची जी कांही भाषणे झाली. त्यातून संसदेतील एक तज्ञ व्यक्ती किंवा वक्ता दर्शविणारी अशी संसदपटूची गुण वैशिष्ट्ये समोर दिसून येतात. 21 नोव्हेंबर, 1962 रोजी त्यांनी संरक्षण मंत्रीपदाची सुत्रे आपल्या होती घेतली. त्यावेळेस यशवंतराव चव्हाण त्या तत्कालीन चीन-भारत युद्धाच्या संघर्षमय वातावरणात संरक्षणमंत्री म्हणून नवखेच असे होते. परंतु त्यांनी न डगमगता पुर्णपणे संरक्षणाच्यादृष्टीने केंद्रासाठी व संपूर्ण भारताच्या सुरक्षतेच्या दृष्टीने चांगल्याप्रकारे कार्य केले. त्यांचा प्रशासकीय अनुभव हा दीर्घस्वरूपाचा होता. संरक्षणमंत्री असताना त्यांनी सतत चार वर्षे संरक्षण विभागाकरिता वेगवेगळ्या स्वरूपाची मागणी केली. याच काळात 1963-64 च्या दरम्यान संसदेमध्ये संरक्षणाच्या वेगवेगळ्या विषयांवर जी कांही चर्चा डिबेट झाले यातून त्यांची चार भाषणे ही यासंरक्षण मंत्रालयाचे प्रतिनिधीत्व करत असल्याची दिसून येतात. तेंव्हा त्या मंत्रालयाची स्थिती अधिक ज्ञान असलेले, चेतना निर्माण करणारे अशा स्वरूपाची बनवलेली होती. यादृष्टीने त्यांची भाषणेही संसदेमधील एक कायदेतज्ञ व्यक्ति किंवा उत्कृष्ट संसदपटू दर्शविणारी अशीच आहेत.

एकंदरित यशवंतराव चव्हाण भारताचे संरक्षण मंत्री असताना त्यांना कांही महत्वपूर्ण कार्ये केलेली आहेत. यांमध्ये लष्करांमध्ये मनोधैर्य निर्माण केले, लष्कर आणि संरक्षण मंत्रालयातील संघर्षाची कारणे शोधून काढली, आणि त्यांमध्ये समन्वय साधण्याचा प्रयत्न केला व कमकुवतता शोधण्याचा



प्रयत्न केला. लष्करी अधिकाऱ्यांना विश्वासात घेऊन कौशल्य आणि संरक्षणामध्ये समन्वय साधला. पहिली संरक्षण विषयक पंचवार्षिक योजना तयार करून भारतीय बनावटीची लढाऊ विमाने, लॉन्डन, फ्रिगेर, वॅज्यंता रणगाड्यांचे उत्पादन सुरु केले. तसेच मिग विमाने तयार करण्याचा कारखाना नाशिकमध्ये सुरु केला. नवीन युद्ध साहित्य केंद्राचे नुतनीकरण केले. हवाईदल आणि लष्करी दल यांमध्ये योग्य समन्वय साधला. भारतीय सीमा भागात सैन्यासाठी दळणवळणाच्या सोयी सुविधा निर्माण केल्या. इ. प्रश्नांच्या संदर्भात भारतीय संसदेला नेहमी विश्वासात घेतले होते. अनेक अधिकाऱ्यांच्या बदली केल्या. काश्मीर, गुजरात, राजस्थान, पंजाब यासारख्या सीमा भागांना भेटी देऊन तेथील अधिकारी व सैन्यांशी चर्चा करून प्रशासनातील समस्या जाणून घेतल्या. त्यांचे मनोबल वाढविण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न केले आणि संरक्षण विषयक करार केले.⁹ अशा प्रकारे संरक्षण मंत्री पदावर असताना यशवंतराव चव्हाणांनी केलेले कार्य उल्लेखनीय आहे. संसदेमध्ये वेगवेगळ्या तज्ञांची मते आणि सल्ला देणारी विधाने यांवर याबाबतीत संसदेमध्ये जी चर्चा किंवा डिबेट होत होते. त्यावेळी यशवंतरावांनी त्यांच्या प्रश्नांची उत्तरे उत्कृष्ट पध्दतीने दिलेली दिसून येतात. उत्कृष्ट संसदपटू म्हणून त्यांची भाषणे ही महत्वाची असायचे. पुढे लाल बहादुर शास्त्री पंतप्रधान झाले असताना देखील भारत ताश्कंद कराराच्यावेळी संरक्षणमंत्री म्हणून यशवंतराव चव्हाण होते.

10 जानेवारी, 1966 साली शास्त्रीजींच्या हृदयविकाराच्या तीव्र झटक्याने मृत्यू झाला. तेंव्हा यशवंतरावांनी त्यांचा देह भारतात घेऊन आले. तेंव्हा त्यांनी मोराजीना पार्टीबा न देता पंतप्रधान म्हणून इंदिरा गांधींना पाठिंबा दिला. पुढे इंदिरा गांधी पंतप्रधान बनल्या आणि इंदिरा सरकारमध्ये संरक्षणमंत्री म्हणून यशवंतराव चव्हाण बनले. त्यांमुळे यशवंतराव चव्हाणांनी संरक्षण मंत्री म्हणून केलेले कार्य देशनिष्ठ, देशातील तळमळ, आणि राष्ट्राभिमान जागृत करणारा आहे. त्याचबरोबर उत्कृष्ट संसदीय प्रणालीचा तज्ञ असणारा असाच आहे.

गृहमंत्री असताना भूमिका-

मा.यशवंतराव चव्हाण यांची 14 नोव्हेंबर, 1966 साली गृह, कायदा आणि सुव्यवस्था मंत्रीपदी नियुक्ती तात्काळीन पंतप्रधानांनी केली. 29 नोव्हेंबर, 1966 साली लोकसभेमध्ये प्रतिबंधक बंधन विधेयेक (Preventive Detention (Continuance Bill)) हे विधेयक निर्माण करण्यासाठी लोकसभेत यांवर डिबेट झाले. त्यानंतर प्रिव्हेन्शीव डिटेंशन ॲक्ट ला नंतर पुन्हा 6 डिसेंबर, 1966 रोजी त्यांवर राज्यसभेत चर्चा झालेली होती. तेंव्हा या संदर्भात यशवंतराव चव्हाणांनी जे भाषण केले ते संसदेतील तज्ञ किंवा संसदपटू म्हणून महत्वाचे होते. या ॲक्टच्या दृष्टीकोणातून त्यांनी मोलत असताना देशातील समस्या कमी करण्याच्या दृष्टीने हा कायदा करणे महत्वाचे आहे. असे प्रतिपादन केले. कायद्याने शिक्षा करण्याच्या दृष्टीने ही तरतुद करण्यासाठी कृती केली पाहिजे. अशा प्रकारची मांडणी त्यांच्या एका भाषणामधुन पुढे आलेली होती.¹⁰ तर दुसरे भाषण हे एस.एम. बॅनर्जी यांच्या प्रश्नाला उत्तर देत असताना त्यांनी संसदेमध्ये शासनाच्या जबाबदारी बद्दल व काळजीपूर्वक वास्तवीकरित्या पाहणाऱ्या दृष्टीकोनाबद्दल एकंदरीत चर्चा केली आहे. अशी या प्रतिबंधक बंधन विधेयकाच्या संदर्भात संसदेमध्ये जी चर्चा झाली ती उत्कृष्ट भाषणाच्या सहाय्याने वक्तीशीरपणा दर्शविणारी अशीच आहेत.

यशवंतराव चव्हाणांनी पुढे (Subject of Gherao) घेराव या विषयी देखिल 31 मे 1967 रोजी राज्यसभेत जी चर्चा केली ही देखील महत्वाची आहे. इस्टर्न झोनल कौन्सिलची मिटींग 18 व 19 मे 1967 साली केंद्रिय गृहखात्यामार्फत भरलेली होती. यामध्ये 'घेराव' या विषयी पत्रकार परिषद देखिल



आयोजित केलेली होती.^{११} आणि त्याच धरतीवर राज्यसभेत देखील ही चर्चा 1967 मध्ये झाली. ती देखील लोकशाही राजकारणाच्या दृष्टीने सकारात्मक विचार करणारी अशीच होती.

तसेच यांशिवाय जेव्हा नेहरु पंतप्रधान होते. तेव्हा 1961मध्ये एक राष्ट्रीय एकीकरण परिषद घेतली होती. पुढे यामध्ये राजकीय पक्षांचे विविध प्रतिनिधी त्यांचे महत्वाचे नेतृत्व त्यांच्या लोकप्रिय विचारांना, शैक्षणिक तज्ञांना यांमध्ये सहभागी करून घेतले होते. त्यावेळी कलम 19 मध्ये घटनादुरुस्ती करून मुलभूत हक्कांच्या अंतर्गत देशाचे सार्वभौमत्व आणि अखंडता विषयी तरतुद करण्याचे ठरविले होते. मात्र पुढे 1967 च्या दरम्यान उत्तर, दक्षिण आणि पूर्व भारतीय भागात कायदा आणि सुव्यवस्थेचा प्रश्न निर्माण झाला. प्रचंड मोठ्याप्रमाणात दबाव निर्माण झाला. तेव्हा संसदेमधील 14 ऑगस्ट 1967 मध्ये राज्यसभेमध्ये या (Unlawful Activities (Prevention) Bill) या संदर्भात संयुक्त अधिवेशनात भाषण दिले. तर दुसरे भाषण 16 नोव्हेंबर, 1967 मध्ये ते बील पुन्हा चर्चा करण्यासाठी लोकसभेत मांडले होते. तेव्हा देखील संयुक्त अधिवेशनात भाषण दिले होते. यातून यशवंतराव चव्हाणांनी भुपेश गुप्ता यांच्या प्रश्नांना उत्तरे देत असताना दिलेली आहेत.^{१२} यातून त्यांच्या संसदेमधील एक तज्ञ व्यक्तीमत्वाची, मुत्सदीपणाची जाणीव आपल्याला होऊ लागते.

यशवंतराव चव्हाणांची अशा स्वरूपाची भाषणे ही केंद्रीय शासनाची भूमिका ठरवण्यामध्ये महत्वाची बनलेली होती.^{१३} कि ज्यामुळे राष्ट्राच्या संदर्भात केंद्र-राज्य संबंधाबाबत भूमिका राष्ट्रपती राजवटीच्या संदर्भात, कलम 356 च्या संदर्भात इ. तरतुदी विषयक चर्चा झाली ही देखील महत्वाची अशीच होती. मात्र असे असले तरी यशवंतराव चव्हाणांनी 1967 चे वर्ष हे गृहमंत्रीपदाच्या कसोटीचे वर्ष होते असे म्हटले आहे. या गृहमंत्री काळात गोवध बंदीची चळवळ नक्षलवादाचे अंसतोष, जातीय दंगली इत्यादी प्रश्न निर्माण झाले. तेव्हा कायदा आणि सुव्यवस्था यांचे रक्षण करण्याचा संबंध हा गृहमंत्र्यांवा येतो. त्यामुळे कॉॅंग्रेस पक्षीय नात्याने सामाजिक न्याय व समता या तत्वांवर समाजाचे स्थित्यंतर घटनात्मक मार्गाने केले पाहिजे. यांवर यशवंतराव चव्हाणांची श्रद्धा आहे. तसेच नक्षलवादाच्या संदर्भात देखील त्यांनी असे म्हटले की आम्हाला विशिष्ट वर्गाचे रक्षण करायचे नव्हते. तर आमच्यास रक्षण करायचे होते ते शांततेचे. बंगालमधील सरकारने जमीनींचा प्रश्न संसदीय मार्गाने न सोडविता तो दहशतीने सोडविण्यात प्रोत्साहन दिले. हींसात्मक सामुदायीक अंदोलन करण्याचे प्रयत्न झाले. तेथे तुमचे सरकार असताना स्थित्यंतर व हींसा कशाला अशी भुमीका त्यावेळेस यशवंतरावांची होती.^{१४} व ती देखील कायदा आणि सुव्यवस्था राखणारी होती. त्यांचा दृष्टीकोन हा कायदेशीर घटनात्मक, राष्ट्रीय व संसदीय लोकशाहीच्या दृष्टीने कायदा आणि सुव्यवस्था निर्माण करणारा होता.

एकंदरीत यशवंतराव चव्हाण हे गृहमंत्री असताना केंद्रराज्य संबंधाबाबत भारतीय राज्यघटनेच्या ११ व्या भागात-जी तरतुद केलेली आहे. त्यासंदर्भात राज्यराज्यातील संघर्ष, अशांतता, कायदा आणि सुव्यवस्था, केंद्राचा हस्तक्षेप इ. चा समावेश होतो. साधारणतः गृहमंत्री असताना यशवंतराव चव्हाणांनी कायदा आणि सुव्यवस्थेच्या संदर्भात अनेक पाऊले उचलली. यामध्ये 18 नोव्हेंबर, 1960 चे समाजवादी युवकजन सभेमार्फत राष्ट्रीय पातळीवर विद्यार्थ्यांचे धरणे अंदोलन सुरु होते. तेव्हा त्यांनी त्यांच्या मागण्याच्या सहानुभूतीपूर्वक विचार केला. गोवध हत्याबंदीला समर्थन देण्यासाठी यमुना नदीच्या काठावर मंदीरात पुरीचे जगद्गुरु शंकराचार्य यांनी उपोषण सुरु केले होते. हे प्रकरण यशवंतरावांनी व्यवस्थित हाताळले. त्याचबरोबर ऑगस्ट 1963 मधील मुस्लीम तरुण आणि हंदु तरुणी यांच्या प्रेमवीवाहामुळे निर्माण झालेली जातील दंगल यामध्ये शांतता निर्माण केली. नक्षली

कारवायांचा बीमोड केला. अनेक राज्यांतील दंगली उदभवल्या तेंव्हा तेथे कायदा आणि सुव्यवस्था राखली. केंद्र-राज्य सरकारमध्ये मतभेद निर्माण झाल्यास वरोधी पक्षांची अनेक राज्यसरकारे बरखास्त केली.^{१५} इ. प्रश्नांच्या संदर्भात यशवंतरावांनी कायदा आणि सुव्यवस्था राखण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न केले.

त्यामुळे यशवंतराव चव्हाण गृहमंत्री असताना देखील वेगवेगळ्या पातळीवर कायदा आणि सुव्यवस्था व शांतता राखण्याच्या दृष्टीने देशाची अखंडता राखण्याच्या दृष्टीने महत्वाचे कार्य केले. 'यशवंतराव चव्हाण एक ताकदवान मंत्री होते'.^{१६} या संदर्भामध्ये वेळोवेळी संसदेमध्ये जी चर्चा झाली. यामधून त्यांच्या भाषणांची उत्कृष्टता समोर येते.

सारांश/समालोचन -

मा. यशवंतराव चव्हाणांच्या व्यक्तीमत्वाचे विविध पैलू समोर आले तरी त्यांच्यातील एक संसदेचा सदस्य म्हणून असणारी भूमिका ही तितकीच महत्त्वाची आहे. जितकी एक मुख्यमंत्री संरक्षणमंत्री अथर्वमंत्री, गृहमंत्री परराष्ट्र व्यवहार मंत्री म्हणून या सर्व पदांचे कायभार सांभाळताना त्यांचे संसदेतील कायदेशीर तज्ञ किंवा वक्ता म्हणून असलेली भाषणे व चर्चा ह्या त्यांच्या विविध मंत्रीपदाच्या संदर्भात वेळोवेळी निर्माण झालेल्या प्रश्नांच्या अनुषंगाने संसदीय लोकशाहीच्या दृष्टीने व देशाचे अखंडत्व राखण्याच्या दृष्टीने, शांतता आणि कायदा व सुव्यवस्था राखण्याच्या दृष्टीने उत्कृष्ट आहेत. त्या भूमिकांमधूनच यशवंतराव चव्हाणांचे संसदपटूचे देखिल गुणवैशिष्ट्य विकसित झालेले आपल्याला पहावयास मिळते. म्हणून आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार विविध खात्याचे मंत्रीपदे इ. याबरोबरच संसदपटू ही देखील त्यांनी उत्कृष्टरीत्या भूषविलेली आहे. याशिवाय जरी स्वतःची अोळख त्यांनी स्वतः निर्माण केलेली असली तरी भारतीय प्रक्रियेमध्ये यशवंतराव चव्हाणांचे नेतृत्व हे एक प्रबळ पक्षनिष्ठा व नेहरुनिष्ठा यांमुळे काँग्रेस पक्षीय व्यवस्थेच्या परिघामधून ते अधिकाधिक केंद्राकडे विकसित होत गेलेले पहावयास मिळते. म्हणून त्यांना विविध पदांवर काम करण्याची संधी मिळाली. यामध्ये एक प्रबळ पक्षनिष्ठा काय असते याचा नवा आदर्श त्यांनी येणारया पिढीसमोर ठेवला आहे. याचे श्रेय यशवंतराव चव्हाण यांना द्यावे लागते. विविध पदांच्या भूमिकामधून ते उत्कृष्ट संसदपटू देखिल होते हे अपल्याला लक्षात घ्यावे लागते.

संदर्भ:-

1. Pradhan R.D.(ed), 'Y.B. Chavan, Selected speeches in parliament, Deefence and home minister', volume-I, Ameya Prakashan -1995,pagepage No.1
2. http://en.wikipedia.org/wiki/yashwantrao_chavan.
3. Kunhi Krishnan T.V. 'Chavan and the Troubled Decade', Somaiya Publications pvt. Ltd. Bomby -1971,Page No.1
4. Pradhan R.D.(ed), 'Y.B. Chavan', Selected speeches in parliament, Deefence and home minister', volume-I, Ameya Prakashan - 1995,pagepage No.56
5. काळे बाबुराव "यशवंतराव चव्हाण", गो.य. राणे, प्रकाशन,पुणे-1965,पृष्ठ क्र.१६
6. कित्ता पृष्ठ क्र.२६
7. http://en.wikipedia.org/wiki/yashwantrao_chavan.
8. http://en.wikipedia.org/wiki/yashwantrao_chavan.
9. कायदे-पाटील गं.वि. "यशवंतराव चव्हाण", चैतन्य पब्लिकेशन्स, नाशिक-2000,पृष्ठ क्र.७१-७२.



10. Pradhan R.D.(ed), 'Y.B. Chavan, Selected speeches in parliament, Deefence and home minister', volume-I, Ameya Prakashan - 1995,pagepage No.137
11. Ibid-Page No.150
12. Ibid -Page No.203
13. Pradhan R.D.(ed), 'Y.B. Chavan, Selected speeches in parliament, Deefence and home minister', volume-II, Ameya Prakashan - 1995.Page No.I
14. चव्हाण यशवंतराव, "भूमिका", प्रेस्टिज पब्लिकेशन्स, पुणे-1979,पृष् क्र.५५-५६.
15. कायदे-पाटील गं.वि. "यशवंतराव चव्हाण", चैतन्य पब्लिकेशन्स, नाशिक- 2000,पृष्ठ क्र.७७-७८.
16. Krishna A.V, 'India Since Independence : Making sence of Indian politics,' Dorling kindersly (India) Pvt.Ltd, Licensses of pearson education in south Asia - 2011,Page No.93



“Recent Trends in Social Sciences”

19th January, 2019

**Special Issue
of
One Day Multidisciplinary National Seminar**

Organized by

**Smt Akkatai Ramgonda Patil Kanya
Mahavidyalaya, Ichalkaranji.**

Editor

Dr. Trishala V. Kadam

Associate Professor, Dept. of Economics,
Smt Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji.

Published by

Dr. Anil Patil

Smt Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji.
Vivekanand Colony,
Near Shahu Putal,
station Road,
Ichalkaranji 416 115.



Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
1.	Amar Raju Jadhav	The Impact of Increasing Population on Environmental Related Issues	1
2.	Dr. Anil Khatal Jambhale	4th Revolution :Cell Phones (MOBILE)	4
3.	Dr. Ashok Vilas Jadhav	Human Development Index of Hatkanangale taluka in Kolhapur District	10
4.	Dr. Babasaheb Shankarrao Shinde	Gender Equality and Development	14
5.	Balasaheb J. Taral	Indian Agriculture, Status & Importance in Indian Economy	18
6.	Benzeer Shikalgar	Enrichment And Purification Of Polyphenols From Fruits	21
7.	Dr. Dhananjay B. Karnik Dr. Atish N. Patil	Environment Degradation And Government Policies In India	24
8.	Dipak Uddhav Gurav	Use Of Digital Resources By Library Users In Arts And Commerce College, Nagthane (Satara): A Case Study	29
9.	Dr. Mrs. H. A. Chougule	A Study on Gender Inequality in India	32
10.	Dr. Ila Jogi	Impact of Gender Inequality on Education and Health of Girl Child	35
11.	Mrs. Komal R. Oswal	Extra Marital Affairs: An Overview	38
12.	Shri.M.B.Hirugade Shri.V.B.Patil	GST Impact on Textile Industry in India	40
13.	Dr.Pandit S. Waghmare	Recent problems In Social Sciences	45
14.	Pratiksha Mangalekar	Gender Equality: Female Symbolism in the Novel <i>Cry, the Peacock</i>	48
15.	Dr. R. D. Jeur Mr.Ashish A. Bhasme	Modernization of Business Transactions through E-Commerce	51
16.	Dr. Ramesh S. Mangalekar	Development Projects: Some Issues	55
17.	Dr.Ramjan Fattukhan Mujawar	Growth of Population: A Challenge before Indian Economy	60
18.	Smt. Rekha D. Pandit	New Trends In Saree Blouse Designs In Kolhapur City	64
19.	Mrs. Rita S. Rodrigues Dr. N. B. Bhagwat	A Role Of Itdc In Development Of Textile Industry In Ichalkaranji	67
20.	S. S. Kulkarni, P. S. Chougule, D. G. Oswal, Simran Nagdev, and Riya Rathod	Development and Evaluation of Energy Bar incorporated with Oil seeds	71
21.	Dr. S. A. Kamble	Historical Development of Chemistry as a Basic Science	77
22.	S.T.Patil	Gender Equality in Society	81
23.	Dr. Sagar R. Powar	GST In India: Challenges & Impact On Indian Economy	84
24.	Dr. Mrs. Sanjivani Jagdish Patil	Effect Of Yoga On Mental Health & Well Being	90
25.	Mr. Satish Kudale	Impact of GST on Indian Textile Industry	93

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
51.	Dr.B. S. Kamble	Gender Inequality In Society: A Case Study Of Belagavi Distrcit In Karnataka	188
52.	डॉ. अरुण गाडे विशाल कांबळे	राज्यशास्त्रातील बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना	193
53.	कु.अलका मारुती कचर	भारतीय शेतीचे बदलते स्वरूप	201
54.	डॉ. आप्पासाहेब शामराव शेळके	राज्यशास्त्रातील बदलते प्रवाह : ग्रीन पॉलिटिक्स	205
55.	डॉ. अर्चना रा. कांबळे जगतकर	लिंग भाव विषमतेकडून -समानतेकडे लेक वाचवा लेक शिकवा अभियानाचे योगदान	207
56.	श्री. अवधुत बाबासो टिपुगडे	महिलांचा राजकीय सहभाग	210
57.	प्रा. दत्तात्रय शिवाजी थोरात	राज्यशास्त्रातील नव-प्रवाह - एक दृष्टीक्षेप	212
58.	दिपक सर्जेराव पाटील-शेटके	कृषी व्यवसायातील आधुनिक पद्धती व तंत्रे	215
59.	जी. बी. कांबळे	देवदासी स्त्री व देवदासी पुरुष (जोगते) यांचे जीवनसमाधान व नियंत्रण धारणा यांचा तुलनात्मक अभ्यास.	217
60.	सौ. हेमलता एन. कोले	पेहेराव्यातील बदलते प्रवाह	221
61.	डॉ.माधुरी राजाराम खोत	पर्यटन व पर्यावरण	224
62.	प्रा. मीना सावंत	लिंग भाव समानतेचा प्रश्न : कृषीक्षेत्रातील ग्रामीण महिलांच्या संदर्भात	226
63.	प्रा. पल्लवी रोहिदास मिरजकर	स्त्री स्वातंत्र्याचे बदलते स्वरूप	229
64.	प्रा.प्रमिला अधिकाराव सुर्वे	कनिष्ठ व वरिष्ठ महाविद्यालयात शिक्षणा-या महिला शिक्षकांच्या कार्यसमाधानाचा तुलनात्मक अभ्यास	235
65.	प्रा.राजाराम मारुती कांबळे	पाचगणी नगरपालिका : नागरी सुविधा आणि आणि विविध उपक्रम	240
66.	डॉ रामेश्वर विक्रम सपकाळ	इतिहास लेखनातील नविन प्रवाह सबाल्टर्न स्टडीज	246
67.	रणधिर उखाजी जाधव	ताण-तणाव व्यवस्थापनात योगाचा प्रभाव	250
68.	प्रा. राजासाव संदे	विकास कि विनाश?	254

राज्यशाखातील बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना

डॉ. अरुण गाडे

Principal,
Smt. Meenalben Maheta College
Of Arts, Commerce & Science Panchgani,
Tal-Mahabaleshwar,
Dist-Satara

विशाल कांबळे

Professor & Head
Deptt. Of Political Science,
Dattajirao Kadam Arts, Science &
Commerce College, Ichalkaranji.

प्रस्तावना :-

राज्यशाखाच्या अभ्यासामध्ये नवीन संकल्पना सिध्दांत रुपाने अस्तित्वात आले आहेत. यामध्ये उत्तर आधुनिकतावाद, स्त्रीवाद, पर्यावरणवाद, बहुसंस्कृतीवाद व समुदायवाद यांचा समावेश होतो. जेव्हा १८ व्या शतकात नव्या विचारांचे प्रवाह निर्माण झाले त्यामधुन आधुनिकतेचा विचार पुढे आला. आधुनिकीकरणाने विवेक आणि विज्ञानाच्या आधारावर प्रगती करू शकते. मनुष्याने विवेकाच्या आधारावर जीवन जगले पाहिजे. अंधश्रद्धा, मागासलेपणा यांचा त्याग केला पाहिजे. मनुष्याचे प्रत्येक वर्तन हे बुद्धी व विवेकाच्याद्वारे समाजातील प्रत्येक गोष्ट तपासली पाहिजे. विवेक हा विज्ञानाची निर्मिती करतो. विज्ञान आणि विवेक यांच्या मदतीने सत्याचा शोध घेण्याचा प्रयत्न मानवाने केला पाहिजे अशा स्वरूपाचे आधुनिकीकरणाने विज्ञान आणि विवेकाचा पुरस्कार केला. आधुनिकीकरणाचा मुख्य उद्देश समाजाचे जीवन सुखकारक व आनंददायी करणे हा असून केंद्रियकरण व एकीकरणाच्या प्रक्रियेला पाठींबा देत असतो. त्यांमुळे भांडवलशाही आणि आधुनिकीकरण याची युती होवून आधुनिकतावाद पसरवू लागले व पुढे याला विरोध करणारी त्या नंतरची चळवळ म्हणजे उत्तर-आधुनिकतावाद होय. जेम्स अँडव्हॅसन, मायकल फुको इत्यादी विचारवंतांनी उत्तर-आधुनिकतावादाचे समर्थन करून केंद्रियकरणाच्या प्रक्रियेला विरोध केला व विकेंद्रिकरण (De-Centralization) याचा पुरस्कार केला. ज्ञान आणि साध्य यांचा परस्परसंबंध प्रस्थापित करून ज्ञान हे सत्तेचा आधारभूत स्रोत आहे. ज्यावेळी ज्ञान उपयोगी पडत नाही त्यावेळी बळाचा वापर हा मोठ्याप्रमाणात केला पाहिजे अशी मांडणी उत्तर-आधुनिकतावादांनी केली. उत्तर-आधुनिकतावादी विचार हा आधुनिकता वादाच्या जेव्हा विरोधी निर्माण झाले. तेव्हा उत्तर-आधुनिकतेचा पुरस्कार झाल्यानंतर पर्यावरण वादी, स्त्रीवाद, शांततावादी विचार पुढे आले. त्याप्रमाणेच पाश्चिमात्य राजकीय विचारांमध्ये उत्तर-आधुनिकतावादाच्या प्रवाहातुन बहुसंस्कृतीवाद व समुदायवादाचे प्रवाह पुढे आलेले आहेत. म्हणून राज्याशाखाच्या अभ्यासामध्ये राजकीय सिध्दांताच्या बाबतीत नवीन प्रवाहातील संकल्पना असल्याने बहुसंस्कृतीवादाच्या विषयी प्रस्तुत निबंधविषयांत सिध्दांतिक चर्चा केलेली आहे.

बहुसंस्कृतीवादाच्या मांडणीमध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, विल किम्लीका, चार्ल्स टेलर, लॉर्ड मिखु पारेख, हॉफमन, सय्यद अली रझा, इ. च्या विचारांच्या संदर्भात स्पष्ट करण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत विषयामध्ये केलेला आहे.

बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना :-

धर्म संस्कृतीमुळे मानवी समुदायाला एक 'आयडेंटिटी' प्राप्त होते. ते कोण आहेत याची जाणीव होते व त्यांच्यातील विविधतेमुळे समाज जीवनात बहुसंस्कृतीचे विविधता साकारते. त्यातुन नव-नव्या गोष्टी परस्परांत शिकता येतात. सौंदर्यवादी व रचनात्मक दृष्टीकोन स्वीकारून जीवन अंतर्बाह्य समृद्ध बनविता येते. तर त्यांच्यातील भिन्नतेमुळे संस्कृती-संघर्षही निर्माण करता येतो. त्यामुळे माणसांच्या वर्तनानुसार धर्म-संस्कृती माणसांमाणसांना जोडते वा तोडते. तसेच स्थलांतरीत मानवी समुदायांना जोडण्यासाठी धर्म, संस्कृतीची सांगड घालण्यासाठी बहुसंस्कृतीवादाची (Multiculturalism) संकल्पना कॅनडामध्ये उदयास आली. पश्चिमेकडील देशांमध्ये बहुसांस्कृतीकवाद ही संज्ञा १९७० च्या दशकापासुन अधिक वापरली जाऊ लागली. त्याआधी १९३८ च्या सुमारास सुशोभित संस्कृती 'कल्चरल मोझॅक' असा शब्द जॉन गिबन यांनी आपल्या 'कॅनेडियन मोझॅक' या पुस्तकांमध्ये वापरला होता. १९६५ मध्ये जॉन पोर्टर यांनी 'Vertical मोझॅक' (लंबरेपा संस्कृती) हा शब्दप्रयोग केला होता. बहुसांस्कृतिकवादाचे धोरण म्हणून त्याचा स्विकार सर्वप्रथम कॅनडाने १९७१ मध्ये केलेला आहे. कॅनडामध्ये ब्रिटिश व फ्रेंच नागरिकांनी स्थलांतर केले होते. क्युबिक प्रांतामध्ये फ्रेंच नागरिकांच्या वसाहती होत्या. त्यांच्यासह कॅनडातील इतर स्थानिक गटांची 'आयडेंटिटी' जपण्याच्या उद्दिष्टाने तेथे ("Multiculturalism") (बहुसंस्कृतीवादाला) मान्यता देण्यात आली. कॅनडाचे 'बहुसंस्कृतीवाद' रुजवण्यात तत्कालीन पंतप्रधान 'पिअरे एलिऑट टुडो' यांनी मोठी भूमिका निभावलेली होती. यासंबंधित 'Poly Ethnic Pluralism' 'पुष्कळ बहुलतावाद' असा शब्द प्रयोग त्यांनी केला होता. पण 'Pluralism' च्या सांस्कृतिक विविधतेचा विचार करता 'Multiculturalism' ही अधिक व्यापक संकल्पना आहे.

प्राचीन काळी सांस्कृतिक विविधता होती. पण त्यात समानतेचे तत्व अंतर्भूत होतेच असे नाही. त्या काळी सांस्कृतिक विविधता व राजकारण या दोन स्वतंत्र बाबी होत्या. अलिकडच्या काळातील त्या राजकीय आहे. त्यात समानतेचे तत्व अंतर्भूत आहे. बहुसांस्कृतीवादानुसार कॅनडात असे मानले जाते की, वंश, वर्ण, लिंग, भाषा, धर्म, संस्कृती इत्यादी भेदाच्या पलिकडे सर्व नागरिक समान आहे. कॅनडातील नागरिकांना आपली आयडेंटिटी जपण्याचा अधिकार आहे. या धोरणामुळे विविध भिन्न गटांतील सामजस्य आणि सलोखा कायम राहून परस्परातील आणखी विलीन होण्याची शक्यता वाढतात. एक प्रकारे बहुसांस्कृतीवादाने राष्ट्रवाद बळकट होवू शकतो, तर दुसरीकडे विविध समाजगटांची आयडेंटिटी जोपासली जाऊन राष्ट्रवाद मागे पडण्याची शक्यता नाकारता येत नाही या पार्श्वभूमीवर बहुसांस्कृतिकवाद म्हणजे नेमके काय आहे याचे उत्तर शोधायला हवे. कोणत्याही धर्म-संस्कृतीच्या व्यक्तींनी मानवी जीवन व्यवहारांकडे बघण्याचा असा बहुसांस्कृतिक दृष्टीकोन अवलंबणे म्हणजे बहुसांस्कृतिकवादाकडे वाटचाल करणे होय. समुदायवाद व बहुसांस्कृतीवाद या विचारांनी युरोप व अमेरिकेमध्ये मोठा प्रभाव निर्माण केला. बहुसांस्कृतीवाद हा इंग्लंडमध्ये मोठ्याप्रमाणात विस्तार झालेला आहे. आधुनिक काळामध्ये राष्ट्रां-राष्ट्रांच्यामध्ये कठोर सीमा निर्माण झाल्या. त्यांतून सीमांच्या बाबतीत अनेक प्रश्न निर्माण झाले. प्रत्येक राष्ट्रामध्ये काही लोक बहुसंख्याक असतात तर काही लोक अल्पसंख्याक असतात. थोडक्यात (संख्येने जास्त किंवा संख्येने कमी) असतात. बहुसंख्याकांना असे वाटू लागले की, बहुसंख्याकांचे मत हे अंतिम आहे. बहुसंख्याकांची हुकूमशाही लादण्यात आली व अल्पसंख्याकांचे मत नाकारण्यात आले. बहुसंख्याकांच्या संस्कृतीचा स्विकार करावा, त्यांची भाषा स्विकारावी असा आग्रह धरण्यात आला, त्यामुळे अल्पसंख्याकांच्या मनामध्ये आपल्या अस्मितेविषयी, शंका, प्रश्न निर्माण झाले. अनेक राष्ट्रांमध्ये अशी समजूत झाली की, अल्पसंख्याकांचे राष्ट्र म्हणजे एक प्रकारचा कोंडवाडा वाटतो. राष्ट्राची निर्मिती अपघाताने झालेली असते. राष्ट्र हे एकच भाषा बोलण्याचे, एकाच धर्माचे, संस्कृतीचे असू शकत नाही. ऐतिहासिक काळामध्ये आर्थिक कारणांमुळे लोक स्थलांतर करित असतात. हे स्थलांतर सर्व राष्ट्रांमध्ये, प्रत्येक देशांमध्ये होत असते. उदा. कित्येक भारतीय लोक अमेरिका, इंग्लंड इ. राष्ट्रांमध्ये नोकरी, शिक्षण, वास्तव्य इ.साठी जात असतात. त्यांमुळे या स्थलांतरामध्ये राजकीयतेचा प्रश्न महत्त्वाचा असतो. त्यांमुळे बहुसंख्याकांच्या दृष्टीने बहुजनवादी विचार १९९० च्या दशकामध्ये मांडायला सुरुवात केली. या बहुसांस्कृतीवादाची मांडणी करणाऱ्या विचारवंतांमध्ये प्रामुख्याने विल किम्लिका (Will Kymlicka), चार्ल्स टेलर (Charles Taylor), लॉर्ड भिखू पारेख (Lord Bhikhu Parekh) इ. विचारवंतांचे योगदान महत्त्वपूर्ण आहे. याशिवाय जॉन हॉफमॅन, व पॉल ग्रॅहम (John Hoffman and Graham Paul), (Sarah Song) सराह सॉंग, सय्यद अली रझा (Syed Ali Raza) इ. विचारवंतांनी आपल्या ग्रंथातून बहुसांस्कृतीवादाची मांडणी आप-आपल्या दृष्टिकोनातून करण्याचा प्रयत्न केला आहे.

१. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची बहुसांस्कृतीवादाविषयी भूमिका :-

भारतातील बहुसांस्कृतीकवादाची मांडणी करताना येथे भारतीय राज्यघटनेच्या संदर्भात करता येईल. भारतीय राज्यघटना निर्मिती प्रक्रियेमध्ये संविधानसभेच्या अहवालामध्ये भाग-३ मधील ४ नोव्हेंबर १९४८ ते ९ नोव्हेंबर १९४८ मध्ये संविधानसभा बोलावण्यात आलेली होती. त्यामध्ये डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे विव्दतापूर्ण भाषण ४ नोव्हेंबर १९४८ रोजी भारतीय संविधानाचे आधारभूत सिध्दांताचे विवेचन करणारे असे झाले. त्यावेळी त्यांनी अल्पसंख्याक व बहुसंख्याक यासंदर्भात मांडणी केलेली दिसून येते. घटनेच्या मसुदासमितीने अल्पसंख्याकाकरिताजेकांही संरक्षणाकरिता तरतुदी केलेल्या आहेत. त्यातरतुदीयोग्य आहेत असे त्यांनी म्हटले आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, "यादेशात अल्पसंख्याक आणि बहुसंख्याक यादोघांनीही चुकिचा मार्ग अनुसरला आहे. अल्पसंख्याकांचे अस्तित्व नाकारणेही बहुसंख्याकांची चुक आहे." यांवर उपायशोधणे आवश्यक आहे. यातून पुढे अल्पसंख्याक व बहुसंख्याक हे एकमेकांत विलीन होतील अशी आशा डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी व्यक्त केलेली आहे.

जेदुराग्रही आहेत, कट्टरविरोधी आहेत, ज्यांनी अल्पसंख्याकांना दिल्याजाणाऱ्या संरक्षणाप्रती एक प्रकारची धर्मांधता विकसित केलेली आहे. त्यांना डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी दोन गोष्टी सांगितलेल्या आहेत. "एक म्हणजे अल्पसंख्याकही विस्फोटक शक्ती आहे. जर यांचा विस्फोट झाला तर त्यांमुळे यादेशाची संपूर्ण इमारतच उध्वस्त होईल. युरोपचा इतिहास याभयानक वास्तव्याचे पुरावे प्रस्तुत करतो." तर दुसरी गोष्ट अशी की, "भारतातील अल्पसंख्याकांनी त्यांचे अस्तित्व आणि भवितव्य बहुसंख्याकांच्या स्वाधीन करणे मान्य केले आहे." असे सांगितले. तेव्हा डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी आर्यलंडचे उदाहरण दिले आहे. ते म्हणतात की, "आर्यलंडचे विभाजन टाळण्यासाठी ज्या वाटाघाटी झाल्या." त्यांच्या इतिहासात रेडमंड कार्सनला म्हणतो की, "अल्पसंख्याक प्रॉटेस्टंटच्या सुरक्षेकरिता कोणत्याही प्रावधानांची मागणी करा, पण आपण आपल्याला लाभलेले एकसंघ आर्यलंड एकसंघ राहूया व यावरून कार्सन उत्तरादाखल म्हणतो की, तुमच्या संरक्षणाचाधिकार असो. तुम्ही आमच्यावर राज्य करावे हे आम्हाला मान्य नाही." के उदाहरण देऊन बाबासाहेबपुढे म्हणतात की, "आर्यलंडसारखी

बहुसंस्कृतीवादातील संघर्षाच्या उपायावरून ठरत असतात. केवळ एकटेपणाचे असून उपयोगाचे नाहीतर ते सर्व गटाला लागू होणारं असले पाहिजे. त्याठिकाणी राहणारे लोक आणि (National Minorities) राष्ट्रीय अल्पसंख्याक असे संबोधलेले आहे. की जे विविध ठिकाणाहून भूप्रदेशातून स्वखुशीने वास्तव्यकरण्यासाठी येत असतात. त्यामुळे विविधता असल्याने अनेक देशांमध्ये संस्कृती विभागलेली आहे. त्याचबरोबर सध्याकाळातील अंदाज घेता विलकिन्लीका यांनी असे सांगितले की, जगातील १.८४ स्वातंत्र्य राष्ट्रांमध्ये ६०० भाषा बोलणारे वेगवेगळे गट राहत आहेत. आणि पाचहजार वंशिक गट आहेत. अतिशय कांही मोजक्या देशांमध्ये भाषेची स्थितीही अशा स्वरूपाचीच आहे. वंशिकदृष्ट्या गट तशाच प्रकारचे आहेत. अशाप्रकारे विलकिन्लीका यांनी संस्कृती (Culture), वंश (Race), मानववंश शास्त्र (Ethnicity) आणि धर्म (Religion) यांचा परस्परसंबंध स्पष्ट केलेला आहे. त्याचबरोबर अंतिमत्ता लोकांना सांस्कृतिक अधिकार औपचारीकरित्या मिळाले पाहिजे. सांस्कृतिक स्वातंत्र्य असले पाहिजे याचे आग्रही प्रतिपादन केलेले आहे. 'Differentiated Citizenship' वेगवेगळे नागरिकत्व हे सर्वनागरिकांना मुलभूत राजकीय अधिकाराच्या रूपाने आनंदाने उपभोगता येईल. शेवटी सांस्कृतिक अधिकाराची रेंज (Range) ही सांस्कृतिक गटांच्या स्वरूपाने मर्यादित असली पाहिजे. त्याचबरोबर जागतिक दळणवळणव्यवस्था आणि खुल्या प्रवाहामुळे वंशिक आणि राष्ट्रीय स्वरूपाची ओळख बदललेली आहे. परंतु बहुसंस्कृतीवादाची आव्हाने यांचा अभ्यास करण्यासाठी "Multicultural Citizenship: A Liberal Theory of Minority Rights" या आपल्या ग्रंथात विलकिन्लीका यांनी मांडणी प्रस्तावनेमध्ये केलेली दिसते.

विलकिन्लीका यांनी बहुसंस्कृतीवादाचे राजकारण स्पष्ट करित असताना आधुनिक समाजांमध्ये अल्पसंख्याक समाज (गट) हा वर्चस्ववादी असतो असे म्हटले. त्याचबरोबर तो स्वःताची ओळख निर्माण करत असताना त्यांचे तेथील राहणीमान व संस्कृती भिन्न-भिन्न असते. तेव्हा 'बहुसंस्कृतीवादा'ला आव्हान बनते. अनेक विविध संस्कृतीने मिळून बहुलवादी (Pluralism) म्हणजे बहुसंस्कृतीवादाचा प्रकार पडतो असे त्यांनी म्हटले आहे. त्याचबरोबर समाजामध्ये एकीकरण करणे महत्वाचे आहे. सर्वसाधारण विविध अल्पसंख्याक गट व त्यांची (Motivation) प्रेरणा हे महत्वाचे असते.

विलकिन्लीका यांनी हा पहिला प्रश्न (Case) विचारला यामध्ये त्यासंबंधी "National Minorities" (राष्ट्रीय अल्पसंख्याक) असा शब्दप्रयोग वापरलेला दिसतो. तेथील मूल्य, संस्कृती, वेगवेगळे प्रकार किंवा स्वतंत्रशासन हे स्थानिक समाजामध्ये बनते. दुसरा (Case) प्रश्न हा संस्कृतीची होणारी भिन्नता (diversity) आणि वैयक्तिक स्वरूपाचे कुटुंबाचे होणारे स्थलांतर हे सैल अशी संस्था बनते. तेव्हा त्याला किन्लीका यांनी "वंशिक गट" (Ethnic Group) म्हटले आहे. तो एक विस्तृत मोठा समाज असतो आणि वंशिक स्वरूपाच्या स्थानिक शासनामध्ये स्वतंत्रपणे प्रभाव पाडत असतात. वेगवेगळ्या संस्कृतीमधून लोक सार्वजनिक स्वरूपाच्या मुख्यकार्यात भाग घेतात व संस्था स्थापन करित असतात. एकंदरीत बहुसंस्कृतीवादाच्या राजकारणांची चर्चा येते केल्ली दिसते.

विलकिन्लीका यांनी 'बहुराष्ट्रीय राज्ये' (Multinational States) आणि 'पुष्कळवंशीय राज्ये' (Polyethnic states) अशा प्रकारे विभागणी केलेली आहे. ज्यामध्ये राष्ट्र-राज्य, व बहुराष्ट्रीय राज्य असा संबंध आहे. त्यांमध्ये संस्कृतीचा प्रकार म्हणजे National Minorities असा आपण वर सांगितलेला आहे. कॅनडामधील शासनाच्या बहुसंस्कृतीवादी धोरणांचा अभ्यास चिकित्सकरित्या केलेला दिसतो व तेथील धोरण हे पुष्कळ अशा वंशीक गटांना हिताचे ठरले आहे. फ्रेंच कॅनडीयन विरुद्ध भाषा बहुसंस्कृतीवाद आहे. कारण येथील धोरण राष्ट्राच्या काळजी पेक्षा वंशीकतेला जवळ करणारे आहे. व आक्षेप विलकिन्लीका यांनी ठेवला आहे. त्यामुळे बहुसंस्कृतीवादाचे धोरण हे पुष्कळ वंशवादी गटांना (Polyethnicity) पाठिंबा देणारे आहे. वेगवेगळ्या ठिकाणाहून आलेले लोक हे विविध संस्कृतीचे, विविध राहणीमान यांचे असतात. तेव्हा (Pluralism Cultural) बहुलवादी संस्कृती असे म्हटले आहे. उदा:- यु.एस.ए., ऑस्ट्रेलिया, कॅनडा इ. मध्ये आहे. कॅनडामधील धोरण हे बहुसंस्कृतीवादाचे होते हे आपण पाहिलेले आहेत. बहुसंस्कृतीवादाचे धोरण (Gay Culture) तेजस्वी संस्कृती व (bureaucratize Culture) प्रशासकीय संस्कृतीमध्ये आहे. व पहिला प्रकार होय. तर दुसऱ्या प्रकारामध्ये रुढी किंवा सुसंस्कृतपणा अशा स्वरूपाच्या (Customs or Civilization) वंशीक गट, लोकांना (Customs) असा उल्लेख केला आहे. तर कॅनडामधील धोरण हे बहुसंस्कृतीवादाचे आहे. त्याला (Civilization) म्हटले आहे. उदा. जर्मन लोक रशियामध्ये राहतात. मात्र ते जर्मनीचे देखील नागरीक आहेत. त्याप्रमाणे ते जर्मन संस्कृतीची जोपासना करत असतात व नागरिक म्हणून देखील जोपासना करत असतात. अशाप्रकारे विलकिन्लीका यांनी आपल्या पुस्तकांमधून बहुसंस्कृतीवादाची मांडणी केलेली आहे. आयरिशयंग या विचारवंताने या स्वरूपाला "Differential Citizenship" 'वेगवेगळे नागरिकत्व' असा शब्द वापरला आहे. याची स्पष्टता विलकिन्लीका यांनी आपल्या पुस्तकातून केलेली आहे.

३. चार्ल्स टेलर यांची बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना :-

चार्ल्स टेलर या विचारवंताने आपल्या "The Politics of Recognition" (१९९३) या पुस्तकातून बहुसंस्कृतीवादाची मांडणी केलेली आहे. टेलरच्या मते, "बहुसंस्कृतीवाद" म्हणजे मनुष्याची ओळख समुदायवादाच्या विचारांच्या चौकटीतून माहितीरूपाने समोर येते. विशेषतः त्यांच्या विविधसंस्कृतीतून बंधुतेच्या समानतेचे राजकारण विशद होत असते. यातून समानता समजावून घेताना (Sameness) "सारखेपणा किंवा तोचपणा" हा आपण विविध परिस्थितीत वेगवेगळ्या गरजा असणे, ओळख, प्रतिके आणि ध्येय बाळगणे यातून विविध लोक बंधुतेची समानता जोपासत असतात. त्यांमधून व्यापकस्वरूपाचा बहुसंस्कृतीवाद स्पष्ट होत असतो. शिवाय टेलरने संस्कृती म्हणजे 'Preserved' जोपासना केलेली 'Strengthened' सामर्थ्यवान, एकमुल्यवादी, स्थितीशील प्रक्रियेला ('Strong Multiculturalism') सामर्थ्यवान बहुसंस्कृतीवाद म्हटले आहे. त्याचबरोबर फ्रेंच भाषेविषयी त्यांने मांडणी केलेले दिसते. जरी टेलरने याविषयी मांडणी केलेली असली तरी (Primary Good) चे पायाभूत मांडणी जॉन रॉल्सने केलेली आहे. असे मत टेलरने मांडले, थोडक्यात विविध समुहातील लोक विविध संस्कृतीची जोपासना करत असताना सांस्कृतिकरित्या समानतेची बंधुता जोपासत असतात. त्यांना तेथे बहुसंस्कृतीवाद असतो असे चार्ल्स टेलरने म्हटले आहे.

४. भिखु पारेख यांची बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना :-

बहुसंस्कृतीवादाची मांडणी उत्कृष्ट करण्यामध्ये व त्याचे सिद्धांतन करण्यामध्ये विलकिम्लीका चार्ल्स टेलर याप्रमाणेच लॉर्ड भिखुपारेख यांचे देखील नांव घेतले जाते. भिखु पारेख या विचारवंताने आपल्या "Rethinking Multiculturalism: Cultural Diversity and Political Theory" (2002) या पुस्तकामध्ये बहुसंस्कृतीवादाची मांडणी केलेली आहे.

१) चार प्रश्न उपस्थित केले आहेत.

पहिला प्रश्न :- बहुसंस्कृतीवाद आणि सांस्कृतिक विविधता यासंदर्भात आहे. अनेक पर्याय बहुसंस्कृतीत उपलब्ध करण्यावर भर देणे हा आहे.

दुसरा प्रश्न :- प्रत्येकाला त्याच्या संस्कृतीप्रमाणे जगण्याचा अधिकार आहे. आणि समाजाने अशी परिस्थिती निर्माण केली पाहिजे की, ज्यामुळे लोक आपले सांस्कृतिक स्वातंत्र्य कोणतेही भिती नबाळगता जगू शकतील.

तिसरा प्रश्न :- हा सांस्कृतिक, बहुविविधता सुंदर आणि पर्यायी बनते यासंदर्भात प्रश्न उपस्थित केला.

चौथा प्रश्न :- हा बहुसंस्कृतीवर समाजातील वेगवेगळ्या संस्कृतीमध्ये सकारात्मक स्पर्धा निर्माण होतात. त्यामुळे बहुसंस्कृतीवादाला विरोध करू नये असे म्हटले आहे. भिखु पारेख यांच्या मते लोकप्रिय लोकांना अशाप्रकारे बहुसंस्कृतीवाद हा पारंपारीक समाजाच्या, संस्कृतीच्या सरभेसळेतून, बहुविविधतेतून निश्चित आणि मुलभूत स्वरूपाची तेथील वेगवेगळी संस्कृती स्पष्ट होते हा प्रश्न विचारला.

२) एकाच समाजात राहताना लोकांच्यामध्ये संस्कृतीची सांस्कृतिक देवाण-घेवाण झाली पाहिजे :-

भिखु पारेख यांच्या मते, एकाच समाजात राहताना लोकांच्यामध्ये संस्कृतीची सांस्कृतिक देवाण-घेवाण झाली पाहिजे त्यामुळे इतरांकडे ज्याकांही चांगल्या गोष्टी आहेत त्याटाकून देतो. म्हणून वेगवेगळ्या संस्कृतीमध्ये लोक एकमेकांजवळ मिळून राहिले पाहिजेत. या सांस्कृतिक विविधतेमुळे लोकांना स्वातंत्र्य मिळते व पर्यायदेखील मिळतात. त्यांमुळे या सांस्कृतिक स्वातंत्र्यामुळे आपण सहज आपल्या अंतरंगामध्ये डोकावून पाहतो. आपल्या व्यक्तीमत्वाला न्याय देण्याचा प्रयत्न करीत असतो.

३) 'एकसंग संस्कृती' कोणतीच असू शकत नाही :-

भिखु पारेख यांच्या मते, 'एकसंग संस्कृती' कोणतीच असू शकत नाही त्यामुळे प्रत्येक संस्कृतीही वेगवेगळ्या प्रवाहाने निर्माण झाली आहे. उदा:- हिंदू संस्कृतीही बौद्ध, जैन, इस्लाम, आदिवासी इ. लोकांच्या प्रभावाखाली निर्माण झालेली आहे. की एकसंग संस्कृती आदर्श असते. प्रत्येक संस्कृती ही तीच्या जडण-घडणीमध्ये वेगवेगळ्या प्रकारे प्रभावीत झालेली असते. जी वेगवेगळी संस्कृती आहे. तीचा अर्थ वेगवेगळ्या प्रकारे लावला जातो. सांस्कृतिक परंपरेमध्ये नेहमी वेगवेगळे अर्थ लावले जातात. सांस्कृतिक विविधता अशाप्रकारे अर्थ लावण्यास परवानगी देते. हे अर्थ लक्षात घेऊन आपल्या संस्कृतीचे उदा:- भारतीय पशू संस्कृती व कृषी संस्कृतीमध्ये बळीराजाचे महत्त्व दिसून येते. लोकांना बहुसंस्कृती सांगून आपण त्यांची स्वतःची संस्कृती असून वेगवेगळे अर्थ लावले जाते. असे भिखु पारेख यांनी सांगितले.

४) संस्कृतीला एकवाक्यता करू शकत नाही. :-

भिखु पारेख यांच्या मते, आपण कोणत्याही प्रकारे संस्कृतीला एकवाक्यता करू शकत नाही. संस्कृतीमध्ये वेगवेगळे घटक असतात. त्यांचा वेगवेगळ्या प्रकारे विकास होणे महत्त्वाचे असते. आपल्या समाजामध्ये, संस्कृतीमध्ये मतभेद असू

शकतात.उदा. अंतर्गतमतभेद व बाह्यमतभेद समाजामध्ये असतात.हे मतभेद निर्माण होणे म्हणजे समाज कमजोर होणे नव्हे.तर समाजाला त्यांच्यावर सहिष्णूवृत्तीने वॉंगले 'पाहीजे.यामतभेदाने नुकसान काहिच होत नाही तर एकमेकांना समृद्ध केले जाते व त्याची ताकद वाढवली जाते.

अंतर्गत मतभेद समाजाला समृद्ध करण्याची भूमिका बजावते.उदा.भारतामध्ये इंग्रज आले तेव्हा ख्रिश्चन मिशनऱ्यांनी कठोर अशी टिका हिंदू धर्मावर,समाजावर केली.त्याटिकेमुळे हिंदू समाजाला आत्मपरिक्षणकरण्याची परिस्थिती निर्माण झाली.याधर्मचिकित्सेमुळे हिंदूधर्मातील जुन्या गोष्टी,अनिष्ट परंपरा ह्या सुधारणा करुन नष्टकरण्यासाठी त्याचा फायदा झाला.म्हणून मतभेद हे जीवनामध्ये आवश्यक व लायक अशा स्वरूपाचे आहेत.त्यामुळे बहुसंस्कृतीवाद धार्मिक व पारंपारीक विचारांचा पुरस्कर्ता आहे.असे भिखू पारेख याविचारवंताने म्हटले आहे.

५) वेगवेगळ्या संस्कृतीमध्ये सुसंबंध साधला पाहीजे :-

भिखू पारेख यांच्यामते“Inter-Cultural dialogues is necessary”म्हणजे वेगवेगळ्या विविध संस्कृतीमध्ये विचारांची देवाण-घेवाण करण्यासाठी सुसंबंध साधला पाहीजे. हिंदू-मुस्लीम यांनी परस्पर चर्चा केली पाहीजे. हिंदू धर्मामध्ये हिंदू राष्ट्रवादी हे मुस्लीमांचा व्देष करतात. ते व्देषांवर आधारित असल्याने समाजाचे नुकसान होत असते.त्यांमुळे त्यांच्यामध्ये सुसंबंध,चर्चा ह्या विविध वेगवेगळ्या सामाजीक संस्कृतीमध्ये झाल्या पाहीजे. याचर्चेमधुन त्यासमाजाला मोठ्याप्रमाणात बहुसंस्कृतीवाद,सांस्कृतीक विविधतेला मान्यता देवून मानवतावादी मुल्यांचे संगोपन करतो. धर्मनिरपेक्षतेच्या नावाने त्यांच्यावर बंदी घातली तर लोकांचे अधिकार मर्यादीत होतात व त्यांना अनेक संकटांना तोंड द्यावे लागते. अशाप्रकारे मांडणी भिखू पारेख याविचारवंताने बहुसंस्कृतीवादाच्या संदर्भात केलेली आहे.

५ John Hoffman and Paul Graham यांची बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना :-

John Hoffman and Paul Grahamयांनी संपादित केलेल्या आपल्या “Introduction of Political Theory”या पुस्तकामध्ये बहुसंस्कृतीवादाची मांडणी केलेली आहे. त्यांच्यामते, बहुसंस्कृतीवाद हे वैयक्तिकतेपेक्षा वेगळ्याप्रकारचा दृष्टीकोण आहे. (Cosmopolitan)‘विश्वबंधुत्वाचा किंवा विश्वाचा नागरीक’ आणि (Multiculturalism)‘बहुसंस्कृतीवाद’ हे दोन शब्द सांगितले व ते दोन्ही समान शब्द आहेत. अशाप्रकारची मांडणी केलेली आहे. लोकांच्या विविध वस्तींचा राहणीमाणांचा समावेश होतो. असा हा (Positive) सकारात्मक दृष्टीकोण आहे. तेथील विविध लोकांच्या वस्तीतुन, त्यांच्या संस्कृतीचा आदर करुन त्यांचे राहणीमान, ते कसे जीवन जगतात व जीवनाची जडण-घडण कशी बनली आहे. यांवरुन तेथील संस्कृतीचे दृष्टीकोण समोर येत असतात. संस्कृती, वंश, मानवंशशास्त्र आणि धर्म यांचा परस्पर संबंध जोडण्याचा प्रयत्न यांमध्ये होत असतो.

६ सय्यद अली रझा यांची बहुसंस्कृतीवादाची संकल्पना :-

सय्यद अली रझा “Syed Ali Raza” याविचारवंताने खऱ्या अर्थाने बहुसंस्कृतीवादाची विस्तृत मांडणी केलेली आहे. या लेखकाने आपल्या“About Religious Interfaith and Harmony- Multiculturalism”या पुस्तकामध्ये बहुसंस्कृतीवादाची चर्चा करताना बहुसंस्कृतीवाद, धर्माचा हस्तक्षेप आणि सलोखा, बहुसांस्कृतीक जगामधील इस्लाम,(Multiculturalism and Monotheism) बहुसांस्कृतीक आणि एकेश्वरवाद मधील तुलना हे या पुस्तकातील पहिल्या भागामध्ये केलेली आहे. तर पुस्तकांच्या दुसऱ्या भागामध्ये संस्कृती आणि (Its origin)त्यांची उत्पत्ति, पाकिस्तानी संस्कृती, पाश्चात्य संस्कृती यांची चर्चा केलेली आहे. सय्यद अली रझा या लेखकांच्या मते, ‘संस्कृती’(Culture) हा (Cultivation) वेगवेगळ्या संस्कृतीला आंतरसंबंध स्पष्ट करणारा शब्द आहे. ‘संस्कृती’ हा शब्द तीन आधारासाठी उपयोगी पडतो.

१) तीन आधार सांगितले

१) पहिला :- जगातील विविध विद्वत्तेची चाचणी करण्याकरिता.

२) दुसरा :- मानवी ज्ञानाच्या एकीकरणासाठी आपले जीवन जगत असताना त्यांचे वर्तन सामाजीक स्वरूपातील प्रतिके, क्षमता यातुन तपासण्यासाठी.

३) तिसरा :- त्यातील दृष्टीकोण, मुल्ये, ध्येय, आणि प्रत्यक्ष व्यवहार हे संघटनात्मक, संस्थात्मक, गटांच्यापातळीवर त्यांची वैशिष्ट्ये संस्कृतीवर आधारभूत आहे. तेव्हा ही संस्कृती सांस्कृतीकवादाचा विचार, १८ व्या व १९ व्या शतकात पुढे आला असे लेखकाने म्हंटले आहे. सय्यद अली रझा यांनी आपल्या पुस्तकात असे म्हंटले की, सर्व राज्यशास्त्रज्ञांच्या मते, संस्कृतीच्या संदर्भात इतिहासामध्ये अंतर्गत सुसंस्कृतपणा आणणारा प्रकार आहे असे म्हंटले आहे.

२) बहुसंस्कृतीवाद स्वेच्छेने बनलेले मिश्रण आहे :-

सय्यद अली रझा यांच्या मते, बहुसंस्कृतीवादमध्ये विविध संस्कृतीचे लोक स्वेच्छेने एकत्रीत येऊन सहित असतात त्यांनी बनलेले मिश्रण आहे(Salad Bowl)असे म्हंटले आहे. या संदर्भात अनेक विश्लेषकांची सिध्दांतांमध्ये भिन्नता या

विषयाच्या बाबतीत आहे. बहुसंस्कृतीवाद ही विविध समाजातील एक-दुसऱ्या गोष्टीमध्ये समाविष्ट होणारी संस्कृती आणि नागरिकीकरण याकरिता आदर्शव्यवस्था आहे. मानवतावाद हा विविध युगातून म्हणजे दगडी युग, औद्योगिक युग आणि तंत्रज्ञान युग या काळातून विकसित व वाढत आलेला आहे. परंतु येथे एकटी, एकटा राहणारा संस्कृती नव्हती. तर आदर्शवादी समाजाच्या उन्नतीसाठी बहुसंस्कृती आहे.

३) बहुसांस्कृतीक समाजाची कल्पना मांडली :-

बहुसंस्कृतीवाद म्हणजे त्यांचे दुसरे नांव हे (Civilization) म्हणजे 'सामाजिक सांस्कृतिक विकास पावलेले' या अर्थाने वेगवेगळ्या विविध समाजातून एकत्रीत स्थापन झालेला समाज म्हणजे 'बहुसंस्कृतीवाद' होय. जगातील विविध भागातील लोक हे रंग, रूप, संस्कृती, धर्म, राहणीमान इ. बाबतीत भिन्न भिन्न स्वरूपाचे असतात. ते नोकरी, व्यवसाय किंवा शिक्षण इ. करिता एका ठिकाणाहून दुसऱ्या ठिकाणी येत असतात. वास्तव्य करून आपले जीवन जगत असतात. तेंव्हा तेथे विविध भिन्न संस्कृतीचे लोक एकत्रीत राहत असतात. त्याला "बहुसांस्कृतिक समाज" (Multicultural Society) असे सद्यद अली रझा यांनी म्हटले आहे. त्यांनी पॅरिस, बर्लिन, न्युयॉर्क, लंडन इ. मोठ्या शहरांचे देखिल त्या संदर्भात उल्लेख केलेला दिसून येतो.

४) बहुसांस्कृतीक समाजामध्ये विश्व नागरिकत्व असते असा उल्लेख केला :-

सद्यद अली रझा यांनी बहुसांस्कृतीक समाजामध्ये राहणाऱ्या अशा प्रकारच्या लोकांना (Cosmopolitians) "विश्वाचा नागरिक किंवा विश्वबंधुत्व जोपासणारा नागरिक" असा उल्लेख केला आहे. की जेथे विविध रंग, रूप, संस्कृती इ. भिन्न स्वरूपाचे लोक राहत असतात. तसेच न्युयॉर्क, चीन, रशिया इ. देशांमध्ये लोक रंग, वेशभूषा, राहणीमानाचा दर्जा इत्यादी बाबतीत भिन्न स्वरूपाचे आहेत व त्यांच्या संस्कृती देखिल भिन्न स्वरूपाच्या आहेत. त्यांमुळे असा बहुसंस्कृतीने राहणारा "बहुसांस्कृतिक समाज" हा जास्त सुधारलेला असतो व तो विश्वबंधुत्व व विश्वाचा नागरिक असणारा असतो असे म्हटले आहे.

५) संस्कृतीच्या विविधतेतून त्यांच्यामध्ये विवाह झाल्यावर खऱ्या अर्थाने बहुसंस्कृतीवाद समाज दिसून येतो. :-

सद्यद अली रझा यांनी बहुसंस्कृतीवादाची ठळक मांडणी करत असताना असे म्हटले की, वेगवेगळ्या संस्कृतीतील अनुभव समजावून घेण्याचा पहिला भाग म्हणजे खऱ्या अर्थाने बहुसांस्कृतिक समाजातील लोक हे आपल्या वेगवेगळ्या संस्कृतीची, भाषा, लिपी, राहणीमानाच्या दर्जा इ. पार्श्वभूमी असताना, त्यांचे धर्मांमध्ये देखिल विविधता असले तरी ते एकत्रीत राहतात व त्याच बरोबर ते विविध संस्कृतीमध्ये ज्यावेळेस विवाह होतात. तेंव्हा तेथील समाज हा बहुसांस्कृतीक असतो. उदा. विविध जाती, धर्म, भाषा, वर्ण इत्यादींमध्ये भेदभाव न करता आंतरजातीय विवाह झाले पाहीजे याचा पुरस्कार करणारे असेच आहे.

६) बहुसंस्कृतीवादामधील धर्माची भूमिका :-

सद्यद अली रझा यांनी आपल्या पुस्तकांमध्ये बहुसंस्कृतीवादामधील धर्माची भूमिका देखिल स्पष्ट केली आहे. त्यांच्या मते, सैध्दांतिक दृष्ट्या धर्मांमध्ये वेगवेगळ्या विविध संस्कृती आल्या. मनुष्य जीवन जगत असताना संस्कृतीचा आधार हा धर्म असतो. प्राचीन प्रवासी हे बदललेल्या वातावरणाचा अभ्यास करत होते. धर्मावर आधारित इस्लाम हा अरबांचा भाग आहे. त्यांमध्ये त्यांचे जीवन जगणे, राहणीमान, वेशभूषा, हिंदुच्या दृष्ट्या व ब्रिटिशांच्या दृष्ट्या भिन्न स्वरूपाची होती. ब्रिटनमध्ये राहणारी हिंदू समुदाय हा मांस खातात, परंतु त्यांच्या धर्मातील हिंदुत्ववाद विश्वबंधुता निर्माण करत असताना मांस खाण्याची परवानगी देत नाही. थोडक्यात भिन्नता दिसून येते. हे सद्यद अली रझा यांनी स्पष्ट केले आहे. बहुसंस्कृतीवाद हा एक संस्कृतीवादातून (Mono-Culturalism) स्पष्ट केलेला आहे. आफ्रिका, आशिया आणि अमेरिकेतील सांस्कृतिक भिन्नता बहुसंस्कृतीवादाच्या संदर्भात वर्णन करताना त्यामध्ये समुदायवाद हा मुख्य प्रवाह आहे असे मत मांडले आहे. बहुसंस्कृतीवादाचे उदाहरण कॅनडामधील देताना सांगितले की, बहुसंस्कृतीवादाचा कायदा कॅनडामध्ये बणविण्यात आले. (Section) २७ या मधुन कॅनडीयन लोकांच्या सांस्कृतिक स्वातंत्र्याचे अधिकार २००१ मध्ये दिलेले आहेत. सुमारे २,५०,६४० लोकांची स्थलांतरीत होऊन विविध भागातून वास्तव्यासाठी कॅनडामध्ये आलेले आहेत. तर अमेरिकेमध्ये म्हणावी तितकी बहुसांस्कृतिकवादाची स्थापना संघराज्य पातळीमध्ये झालेली नाही. त्याचबरोबर यु.के.मध्ये १९७० आणि १९८० मध्ये स्थानिक प्रशासनाच्या दृष्टीने बहुसांस्कृतीक धोरण टॉनी ब्लेअर यांनी जाहीर केले. आर्यलंडमध्ये भारतीय लोक विशेष करून

राहत आहेत. तेथे ब्रिटिश नागरिकांचे (Record) १४०,७९५ (१२%) सन २००० मध्ये तेथे बहुसंख्येने आफ्रिकेतील (३२%) आणि आशियातील (४०%) लोक व त्यांचे गट समुदाय जीवन जगत आहेत. तेथे पाकिस्तान, भारत, सोमालिया येथील लोक आहेत. मात्र इंग्लंडमधील तत्कालीन प्रधानमंत्री पुराणमतवादी पक्षाचा नेता डेविड कॉमरन Cameron यांच्यामते "State Multiculturalism has failed" राज्य बहुसंस्कृतीवाद अपयशी ठरला आहे. असे म्हटले आहे. असे सद्यद अली रझा

यांनी आपल्या पुस्तकांमधुन सांगितले आहे. त्याच बरोबर युरोप खंडातील संस्कृतीवादाची चर्चा केली आहे. पाकिस्तान आणि भारत यांची चर्चा केलेली दिसून येते. सय्यद अली रझा यांच्या मते, पाकिस्तान 'व' भारत या देशामध्ये वंश, धर्म, जात, संस्कृती, भाषा, ठिकाण इ. दृष्टीने विविध मोठ्या प्रमाणात भिन्नता आहे. भारतीय संस्कृतीमध्ये विविधता व भिन्नता आहे. त्यास बहुसंस्कृतीवाद म्हटले आहे. येथे हिंदू, बौद्ध, जैन, मुस्लीम, ख्रिश्चन, पारशी, शीख इत्यादी धर्मांचे लोक राहत आहेत. येथे विविध भाषा बोलल्या जातात. अशाप्रकारे स्पष्टता सय्यद अली रझा यांनी केले आहे. एकंदरीत सय्यद अली रझा यांनी वरीलप्रमाणे आपल्या पुस्तकांमधुन बहुसंस्कृती वादाची मांडणी केलेली आहे.

समारोप :-

राज्याशाखाच्या अभ्यासामध्ये राजकीय सिध्दांताच्या बाबतीत पर्यावरणवाद, समुदावाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, बहुसंस्कृतीवाद हे नवे सिध्दांतव संकल्पनामहत्वाचे आहेत. थोडक्यात अल्पसंख्याकांच्या मनामध्ये बहुसंख्याकांची भिती न बाळगता व बहुसंख्याकांनी आपले मत अंतिम समजुन ते अल्पसंख्याकांवर न लादता सांस्कृतिक स्वातंत्र्याचा अधिकार देणे व एकत्रीत समाजात राहताना सांस्कृतिक विचारांची देवाण-घेवाण होणे व त्यांमध्ये वेगवेगळ्या संस्कृतीमध्ये सुसंबंध साधणे हे बहुसंस्कृतीवादामध्ये महत्वाचे आहे. त्याचबरोबर सांस्कृतीक स्वातंत्र्याचा पुरस्कार करणारा असा हा बहुसंस्कृतीवाद आहे त्याचबरोबर भारतामध्ये बहुसंख्याक हा राजकीय दृष्ट्या नसुन तो जातीय दृष्ट्या आहे. अल्पसंख्याक हे राजकीय दृष्ट्या कमी आहेत. यांच्यामध्ये परस्परसंबंध स्पष्ट निर्माण होवून पुढे एकीकरण होणे हे भारतीय राष्ट्रीय अखंडतेसाठी व एकात्मतेसाठी महत्वाचे आहे. असे सांगितलेले बहुसंस्कृतीवाद हा डॉ.आंबेडकरांच्या ४ नोव्हेंबर १९४८ च्या भाषणामधुन अल्पसंख्याक व बहुसंख्याक याबद्दलच्या विचारातुन स्पष्ट होतो. पाश्चात्य विचारवंतापेक्षाही यापूर्वी भारतामध्ये डॉ.आंबेडकरांनी याची स्पष्ट मांडणी केली होती हे समोर येते. अशाप्रकारे बहुसंस्कृतीवादाचा सिध्दांत हा विविध विचारवंतांनी आपल्यापरिने स्पष्ट केलेला आहे. यामधुन सांस्कृतीक अधिकाराचा पुरस्कार केलेला आहे. थोडक्यात बहुसंस्कृतीवादामुळे विविध संस्कृतीमध्ये सलोखा, सामंजस्य निर्माण होऊन राष्ट्रीय एकात्मतेच्या दृष्टीने व बंधुतेच्या दृष्टीने महत्वाचे आहे. परंतु राष्ट्रवादाला आव्हान बनू शकते हे नाकारता येत नाही. प्रत्येक समुदाय किंवा सांस्कृतीक गट हा आपापल्या संस्कृतीचे जतन व जोपासना करत असताना दिसतो. त्यामुळे पुढे विश्व नागरीकत्व किंवा विश्वबंधुत्व या सारख्या गोष्टी मानवी विकासासाठी महत्वाच्या ठरू शकतील. सांस्कृतीक स्वातंत्र्य, अधिकार यांची हमी मिळत असते. त्यामुळे बहुसंख्याक व अल्पसंख्याकांनी आपआपल्या संस्कृतीची जोपासना करित असले तरी ते इतरांच्या संस्कृतीचा आदर करून समाजात सलोखा निर्माण करणे महत्वाचे असते. विविध संस्कृती, धर्म, भाषा, जात इत्यादी भिन्न लोक एकत्रीत रहात असताना त्यांच्यामते ज्यावेळेस खऱ्या अर्थाने विवाह होतील. तेंव्हा त्यामध्ये बहुसंस्कृतीवाद स्पष्ट होतो. पुढे बहुसंख्याक व अल्पसंख्याक हे एकमेकात बंधुतेच्या भावनेने विलिन होतील. तेंव्हा विश्वबंधुता व विश्वनागरीकत्वाच्या दृष्टीने आणि सांस्कृतीक स्वातंत्र्याच्या अधिकाराच्या दृष्टीने हे महत्वाचे आहे. अशा प्रकारे एकंदरीत बहुसंस्कृतीवादाची मांडणी सिध्दांत रूपाने करता येईल. तसेच बहुसंख्याकांनी आपली संस्कृती श्रेष्ठ आहे असे समजुन अंतिमता आपली भाषा, संस्कृती यांचा पुरस्कार अल्पसंख्याकांनी करावा असे मत त्यांच्यावर लादणे व अल्पसंख्याकांच्या मनात बहुसंख्याकांविषयी कायम भितीची व असुरक्षितेची भावना वाढीस लागणे हे चांगल्या राष्ट्रवादाच्या दृष्टीने योग्य नाही. त्यामुळे असा बहुसंस्कृतीवाद हा न जोपासता अल्पसंख्याक आणि बहुसंख्याक यांनी सांस्कृतीक स्वातंत्र्याचा अधिकार उपभोगत असताना समाजामध्ये शांतता, सामंजस्य व सलोखा निर्माण करून बंधुतेच्या भावनेने राष्ट्रीय एकता आणि अखंडता या दृष्टीने राष्ट्रीय एकात्मता जोपासण्यासाठी महत्वाचे आहे. हे राष्ट्रवादाला पोषक आहे.

संदर्भ / Referencess :-

- 1) Kymlicka will, "Liberalism, Community and culture, Oxford University Press, first published Briten – 1989.
- 2) Kymlicka will, "Multicultural-Citizenship : A liberal Theory of Minority Rights" Oxford University Press, First Pub. New York 1995
- 3) Parekh Bhikhu. C, "Rethinking Multiculturalism : Culultural Diversity and Political Theory", Macmillan Press Ltd, First United Kingdom publication, Harvard University Press, Cambridge-2000.
- 4) Hoffman John, Graham Paul, "Introduction to political Theory", Pearson Education ltd, Published by Dorling Kindersley, India, 2006.
- 5) Raza syed Ali, "About Religious Interfaith and Harmony Multiculturalism", peace full Glogal trust, village A cahal park, Gulberge II, Lahore, Pakistan.
- 6) Song Sarah, "Justice, Gender and the Politics of Multiculturalism", Cambridge 2007.
- 7) Batra Pooja, "Multiculturalism Education," A mittal Publication, First edition, Daryaganj, New Delhi. 2004
- 8) Mckinnon Catriona (edi), "Issues in political Theory," Oxford University Press, United States, New York. 2009
- 9) गायकवाड प्रदीप (संपा), "भारताचे संविधान" दीक्षाभूमी संदेश, दुर्गा ऑफसेट, दहावी आवृत्ती, लष्करीबाग, नागपूर - २००६
- 10) डॉ. चौसाळकर अशोक, यांचे अप्रकाशित व्याख्यान.

